

गोलापूर्व जैन

» वर्ष : 14 » अंक : 56 » जनवरी-जून 2020 (संयुक्तांक) » मूल्य : 15 रु.

रुई के व्यापार में हुए एक दिन के मुनाफे से बना मंदिर
**श्री 1008 पाश्वर्नाथ दिगंबर जैन
अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी, गढ़कोटा**



श्री 1008 पाश्वनाथ दिग्म्बर जैन अतिथय क्षेत्र पटेरियाजी, गढ़कोटा



गोलापूर्व जैन

(त्रैमासिक)

■ वर्ष : 14 ■ अंक : 56 ■ जनवरी-जून 2020(संयुक्तांक) ■ मूल्य : रु. 15 ■ आजीवन : रु. 501

॥ संस्थापक सम्पादक ॥

स्व. पं. मुन्नालालजी रांधेलीय व्यायतीर्थ

(1893-1993, सागर)

॥ परामर्श प्रमुख ॥

डॉ. शीतलचंदजी जैन
जयपुर (मो. 09414783707)

॥ मार्गदर्शक ॥

डॉ. नेमिचंदजी जैन
खुरई (मो. 09406538295)

॥ प्रबंध सम्पादक ॥

सुरेन्द्र खुर्देलीय
(मो. 9893198459)



॥ प्रधान सम्पादक (मानद) ॥

राजेन्द्र जैन 'महावीर'
सनावद



॥ सह सम्पादक (मानद) ॥

श्रीमती (डॉ.) रंजना पटोरिया
कटनी
(मो. 9827279009)

ई-मेल : gkhurdelia@gmail.com

(मो. 9407492577, 9826299568)
ई-मेल : rjainmahaveer@gmail.com

॥ प्रकाशक एवं प्रधान कार्यालय ॥

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजिस्ट्रेशन नं. 06/09/01/06188/07)

द्वितीय तल, तीर्थकर परिसर, डॉ. पं. पञ्चाल जैन साहित्याचार्य मार्ग

कटरा बाजार, सागर (म.प्र.), फोन : 07582-243101

ई-मेल : golapurvmahasabha@gmail.com

महासभा की सदस्यता शुल्क

■ शिरोमणि संरक्षक :	1,00,000.00
■ परम संरक्षक :	51,000.00
■ विशिष्ट संरक्षक :	31,001.00
■ गौरव संरक्षक :	21,000.00
■ संरक्षक :	11,000.00
■ विशिष्ट सदस्य :	5,101.00
■ सहयोगी सदस्य :	2101.00
■ आजीवन सदस्य :	501.00
■ वार्षिक सदस्य :	240.00

अनुरोध

कृपया महासभा के उपरोक्तानुसार श्रेणी में सदस्य बनें एवं जिन सम्माननीय सदस्यों की सदस्यता राशि/विज्ञापन राशि बकाया है, कार्यालय में शीघ्र भेजकर सहयोग प्रदान करें।

आवश्यक : ● लेखक के विचारों से सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ रचनाएँ कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर स्वच्छ हस्तालिखित अथवा टाइप की हुई आना चाहिए। समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भिजवाना आवश्यक है। आयोजनों तथा अन्य अवसरों के समाचार संक्षेप में भेजें। ● 'गोलापूर्व जैन' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएँ, लेख, कविता, कहानी, समाचार एवं समीक्षार्थ पुस्तकें राजेन्द्र जैन 'महावीर', 217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.) 451111, ई-मेल rjainmahaveer@gmail.com, पर भेजें।

(पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र सागर ही रहेगा।)

निवेदन पाठकों से

'गोलापूर्व जैन' पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को स्थायित्व प्रदान करने के लिए आजीवन रु. 500 या वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 50 कार्यालय में नकद या ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करते रहने की कृपा करें। घर में होने वाले मांगलिक कार्यों में घोषित दान भेजें। -संपादक

प्रकाशक : अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा, प्रधान कार्यालय : तीर्थकर परिसर, नमक मंडी, कटरा बाजार, सागर के लिए अरिहंत ऑफसेट, सागर से मुद्रित। लेआउट/डिजाइन : नितिन पंजाबी, वी.एम. ग्राफिक्स, इंदौर (मो. 098931-26800)



समय के साथ 'अपडेट' होती महासभा

आइये! हम भी समय के साथ चलें...

आज मुझे लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारी नवीन कार्यकारिणी भी बन गई है और वह नित नवीन निर्णय लेकर महासभा को अत्याधुनिक रूप से 'अपडेट' भी कर रही है। पहले तो हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोषजी जैन 'घड़ी' की सम्पूर्ण टीम को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ।

आज शुरुआत एक कहानी से, जो हम सबके लिए आवश्यक है।

तीन व्यक्ति ईटों की जुड़ाई कर रहे थे तो एक व्यक्ति जो वहाँ से गुजर रहा था, उसने उनसे पूछा कि क्या कर रहे हो? पहले आदमी ने कहा कि देखते नहीं हो, रोजी-रोटी कमाकर अपने भोजन का प्रबंध कर रहा हूँ। दूसरे ने कहा- तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मैं ईटों की जुड़ाई (चिनाई) कर रहा हूँ। तीसरे व्यक्ति ने कहा- देखो मैं कितना सुन्दर भवन बना रहा हूँ जो अद्भुत होगा। तीनों व्यक्ति एक ही काम कर रहे थे, लेकिन तीनों के कहने का ढंग, तीनों के काम करने का नजरिया अलग-अलग है। तो क्या ये नजरिया उनके काम पर असर डालेगा? हाँ, बिल्कुल डालेगा। हमारा नजरिया ही काम करने के तरीके व सफलता को स्पष्ट करता है।

आज हम सभी कहीं न कहीं निराशा में डूब जाते हैं। कोरोना ने हमारे नजरिये को बदल दिया है। इसलिए हमें सबसे पहले हमारा नजरिया सकारात्मक करना है। आज सब ओर निराशा का बातावरण है। इस दौर में हमारी अपनी 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा' ने अपने आपको बदलने की कोशिश के साथ 'ऑनलाइन' अपडेटेशन की प्रक्रिया को बढ़ाया है। हमारे युवा साथी राजेशजी, दीपेशजी, विवेकजी ने हम सभी को ऑनलाइन कर दिया है। हमारी वेबसाइट बन गई है, उसमें हमारी ऑनलाइन जनगणना हो रही है। हमारी सारी गतिविधियों को एक स्थान पर हम देश-विदेश में ही नहीं, हर हाथ में देख सकते हैं। हमारी सारी पत्रिकाएँ भी उस पर पढ़ सकते हैं, आज हर हाथ ऑनलाइन है। जो ऑनलाइन नहीं है वह आज की दुनिया से अपडेट नहीं है।

जो व्यक्ति, जो समाज, जो राष्ट्र समय के साथ अपने को नहीं



राजेन्द्र जैन 'महावीर'

बदलते वे समाप्त हो जाते हैं। उनका इतिहास विलोपित हो जाता है। समय के साथ हमारा व्यापार, व्यवहार, कार्यप्रणाली सब कुछ बदली है, करोड़ों का व्यापार एक क्लिक पर हो रहा है। पेपरलेस की ओर हम बढ़ रहे हैं। आज के कोरोना संकट में हम नोटों को हाथ लगाने से डर रहे हैं, डिजिटल की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे में हमें 'अपडेट' तो होना ही पड़ेगा। आज हमारे युवा अपनी समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, अपनी पहचान स्थापित करना चाहते हैं, उनके लिए डिजीटल प्लेटफार्म बहुत आसान है। आज देश-विदेश के हर कोने में हमारे युवा जा रहे हैं, अच्छा कर रहे हैं, उन्हें समाज के साथ जोड़े रखने का यदि कोई प्लेटफार्म है तो वह 'डिजीटल' ही है। अब सब कुछ हमारे हाथ में है। गोलापूर्व समाज की सारी जानकारी एक क्लिक पर एक वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आइये, हम शीघ्र इस डिजीटलाइजेशन में सहयोग करें। जनगणना का कार्य पूर्ण करें और अपडेट हो जाएँ। इस कार्य के लिए हमारे युवा साथियों की टीम को बहुत-बहुत बधाई व महासभा टीम को साधुवाद जो उन्होंने डिजीटल प्लेटफार्म का उपयोग करने को बढ़ावा देकर गोलापूर्व समाज का 'ग्लोबलाइजेशन' कर दिया है।

इस अंक में विलम्ब के लिए क्षमा। हम अपने गौरव तीर्थ अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी गढ़ाकोटा का परिचय दे रहे हैं जो हमारा गौरव है कि हमारे पूर्वज कितने बड़े दानवीर व निर्मल परिणामों के धनी थे। हम भी अपने परिणामों में निर्मलता, पवित्रता, विशालता लाते हुए नजरिये को बदलें और समाज के 'ग्लोबलाइजेशन' व 'डिजीटलीकरण' में अपना सहयोग यथाशीघ्र प्रदान करें।

गुरु मंत्र :-

“‘इस बात की चिंता न करें कि अन्य लोग आपके बारे में क्या सोच रहे हैं, वे यह सोचने में व्यस्त हैं कि आप उनके बारे में क्या सोच रहे हैं’’ इसलिए-

अंधेरे पर क्यों झल्लाएँ, अच्छा हो एक दीप जलाएँ।



आवरण कथा

एक दिन के मुनाफे से निर्मित अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी (गढ़ाकोटा)

» राजेन्द्र जैन महावीर

217, सोलंकी कॉलोनी, सनावद, जिला खरगोन (म.प्र.)

लगभग 300 वर्ष पहले यह नब्बे फीट ऊँचा गगन
चुम्बी जिनालय बनोनया वंश के श्रावक शिरोमणि
श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन ने
अपने रुई के व्यापार के एक दिन के
मुनाफे से बनवाया है। इतना ही नहीं,
मंदिर में तेईसवें तीर्थकर श्री
पाश्वनाथ की तीन प्रतिमाएँ साढे
सात फीट ऊँची विराजमान
कराकर पंच कल्याणक
प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव भी
कराया है।



विश्व में अद्वितीय, अप्रतिम व अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति की गरिमामय झाँकी के दर्शन इसके चिर पुरातन देवालयों और उनमें विराजित प्रतिमाओं, गिरि कन्दराओं में उत्कीर्ण भित्ति चित्रों, स्तम्भों पर अंकित लेखों आदि में होते हैं। भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम शिल्प के रूप में जैन धर्म का अपना एक विशिष्ट महत्व है। श्रुत वर्णित जिनालयों, देवालयों, गिरि-कन्दराओं में उत्कीर्ण शिल्प कौशल भारतीय वास्तुकला में अपना अद्वितीय-अनुपम स्थान रखती है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के द्वारा यह प्रमाणित होता है कि भारत वर्ष में आर्यों के आगमन से पूर्व यहाँ के निवासी 'श्रमण संस्कृति' के उपासक थे।

श्रमण संस्कृति के पावन पवित्र तीर्थ है पटेरियाजी

तीर्थ हमारे आध्यात्मिक जागरण के साधन हैं। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप वातावरण का प्रभाव चित्त वृत्ति पर पड़ता ही है। जीवन में प्रेरणा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति विशेष के जीवन और स्थल विशेष की घटनाएँ बहुत बड़ा काम करती हैं।

ऐसी ही एक घटना जो अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी से हमको सहज ही जोड़ देती है। हम जीवन में अनेक प्रवचन सुनते हैं, धर्म की बातें करते हैं, लेकिन अपना नहीं पाते हैं। यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। हम सबके

लिए बड़े कौतुहल का विषय होता था जब पूज्य पिताजी से ठ श्री पूर्नचंद्रजी हमें बड़े गर्व से बताते थे कि हमारे गाँव गढ़ाकोटा

में एक दिन की रुई मुनाफा से एक मंदिर बना जो आज अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी कहलाता है। बचपन से कई बार यह बात उनके मुख से सुनी व वहाँ जाकर देखा तो निरीह शांत वातावरण में चैतन्य चमत्कारी भगवान पाश्वनाथजी की प्रतिमाएँ मानो अपनी नासा मुद्रा के साथ पद्मासन में हमसे कह रही हों कि 'मेरे दर्शन से स्वयं के दर्शन कर लो। जिस इच्छा-कामना से

तुम संपारी जीव मेरे पास आते हो,
उनका त्याग करके ही हम
यहाँ पहुँचे हैं और जिस
मंदिर के दर्शन
कर रहे



हो वह नश्वर धन का त्याग कर पवित्र निर्मल भावना से निर्मित हुआ है।

लगभग 300 वर्ष पहले यह नब्बे फीट ऊँचा गगन चुम्बी जिनालय बनोंनया वंश के श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन ने अपने रुई के व्यापार के एक दिन के मुनाफे से बनवाया है। इतना ही नहीं, मंदिर में तेईसवें तीर्थकर श्री पाश्वनाथ की तीन प्रतिमाएँ साढ़े सात फीट ऊँची विराजमान कराकर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव भी कराया है।

संसारी प्राणी श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन से प्रेरणा लो। यह धन नश्वर है। इसका उपयोग कर लो तो जीवन सार्थक है। अन्यथा जैसे आए हो वैसे ही बिना किसी उद्देश्य के जीवन से चले जाओगे।

दर्शन से उपजती हैं भावनाएँ

जैन प्रतिष्ठा विधान में उल्लेख है कि जिन मंदिर बनाने वाले, प्रतिष्ठा कराने वाले, प्रतिमा विराजमान कराने वाले, प्रतिमा निर्माण करने वाले शिल्पी सभी की भावनाएँ निर्मल व पवित्र होनी चाहिये। अन्यथा प्रतिमा का प्रभाव उतना नहीं होता जितना प्रतिष्ठा मंत्रों के बाद होना चाहिये।

हमारे सामने उदाहरण है तीर्थक्षेत्र श्रवणबेलगोला के बाहुबली स्वामी 1040 वर्ष से जैन धर्म की प्रतिष्ठा को विश्वव्यापी किये हुए हैं। ऐसे ही बुंदेलखण्ड की प्राचीन धरा पर जहाँ द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धि आज भी देखने को मिलती है। उस समय कितनी पवित्र भावना होगी जिसका प्रभाव आज भी है और आगे भी रहेगा। क्योंकि जैन दर्शन में भावों की निर्मलता, भावों की विशुद्धता ही श्रद्धा व सम्प्रकृत्व उत्पन्न कराने में सहायक होती है। जिसका कारण है कि पटेरियाजी की ऊर्जामयी भूमि से अनेक त्यागी हुए हैं जिनमें पाँच त्यागी वृद्ध दिग्म्बरत्व की प्रभावना में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

गढ़ाकोटा के गौरव के रूप में पूज्य उपाध्याय मुनिश्री गुप्तिसागरजी का नाम अग्रगण्य साधकों में से एक है। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित श्री गुप्तिसागरजी महाराज आज देश के प्रख्यात साधक हैं जिन्होंने न केवल अपनी साहित्य साधना की है बल्कि अपनी वात्सल्यमयी

प्रवचन शैली से देशभर में शाकाहार, जीवदया, अहिंसा, करुणा का प्रचार किया है व अनेक जिन मंदिरों के प्रेरणा स्रोत बने हैं। साथ ही गढ़ाकोटा नगर के प्रथम दिग्म्बर मुनि के रूप में आपकी पहचान है।

साथ ही गढ़ाकोटा के गौरव मुनिश्री अजितसागरजी, मुनिश्री प्रर्थनसागरजी, आर्यिका आगातमती माताजी, ऐलकश्री सिद्धान्तसागरजी महाराज सम्पूर्ण देश में दिग्म्बरत्व का गौरव स्थापित किये हुए हैं। यह गढ़ाकोटा के अतिशयकारी तीर्थ पटेरियाजी व गढ़ाकोटा नगर में निर्मित भव्य जिनालयों की प्रतिमाओं का ही प्रताप है जिससे प्रेरणा लेकर ये तपस्वी जिनधर्म की पताका को थामे हुए हैं।

भट्टारक महेन्द्रकीर्ति ने कराई थी प्रतिष्ठा

भट्टारकों को जिनधर्म के ग्रंथ बचाने व धर्म को सुरक्षित रखने का श्रेय दिया जाता है। दक्षिण भारत का इतिहास तो भट्टारकों की यशोगाथा से भरा पड़ा है। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्ति का उल्लेख सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में भी आता है। उन्होंने ही सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट को खोजकर पुनर्स्थापित कर प्रतिष्ठा कराई थी।

भट्टारकजी श्री महेन्द्रकीर्तिजी ने अपने पवित्र भावों से जिन प्रतिमाओं का पंचकल्याणक कराया वे आज भी बोलती हुई प्रतीत होती हैं। यह दाता की पवित्र भावना व प्रतिष्ठाचार्य की निर्मलता की जीती-जागती मिसाल है कि जब गजरथ महोत्सव में पुढ़ी तलने के लिए धी कम पड़ गया तो भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी ने आदेश दिया कि ‘घबराओ मत, मंदिर के मुख्य द्वार के दाहिनी ओर जो कुण्ड है उसका पानी कड़ाही में डालो, धी की कमी पूरी हो जाएगी।’

कहते हैं भावना भवनाशिनी। भाव शुद्ध हो तो सब शुद्ध। भावना की शुद्धि से जो भी किया जाता है वह सफल होता है। ऐसे अनेक उदाहरणों से हमारा प्रथमानुयोग भरा पड़ा है। आज भी पटेरियाजी में भट्टारकजी की भावनाएँ व अतिशय स्तम्भ सुरक्षित हैं।

दिग्म्बर आचार्य मुनियों का पसंदीदा स्थल

चैतन्य चमत्कारी अतिशय क्षेत्र श्री पटेरियाजी बुंदेलखण्ड के प्रमुख तीर्थों में से एक है। सुनार नदी किनारे सुरम्य वातावरण में 100 वर्ष पूर्व मुनिश्री क्षेमसागरजी की प्रेरणा से यहाँ विकास का ऋम प्रारंभ हुआ जो आज भी जारी है। इस युग के महातप्सी संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने यहाँ प्रवास किया और तीर्थ की महिमा को बताया। उन्होंने अपनी



आशीष अनुकम्पा से उनके परम प्रभावी शिष्य पूज्य मुनिश्री क्षमासागरजी एवं मुनिश्री गुप्तिसागरजी महाराज को 1986 व 1998 में चातुर्मास हेतु आदेश दिया, जिसका परिणाम है कि क्षेत्र पर सुविधाओं का विस्तार हुआ है।

क्षेत्र पर आज सर्व सुविधायुक्त ऐसी अटैच रूम उपलब्ध हैं। धर्मशाला है, हॉल है, संत निवास है। भोजनालय की सुविधा है। सभी प्रकार के संसाधन आज क्षेत्र पर उपलब्ध हैं। वहीं विकास का कार्य अत्याधुनिक ढंग से जारी है। क्षेत्र कमेटी के पूर्वज पदाधिकारियों ने अपनी सोच से इसे सोचा है। वहीं वर्तमान पदाधिकारी उसे पुष्टि पल्लवित कर अपनी सेवा का समर्पण प्रदान कर रहे हैं। वहीं क्षेत्र के विधायक गढ़ाकोटा निवासी म.प्र. सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री गोपाल भार्गव का सहयोग भी निरंतर प्राप्त होता रहता है।

दर्शनीय है गढ़ाकोटा के जिनालय

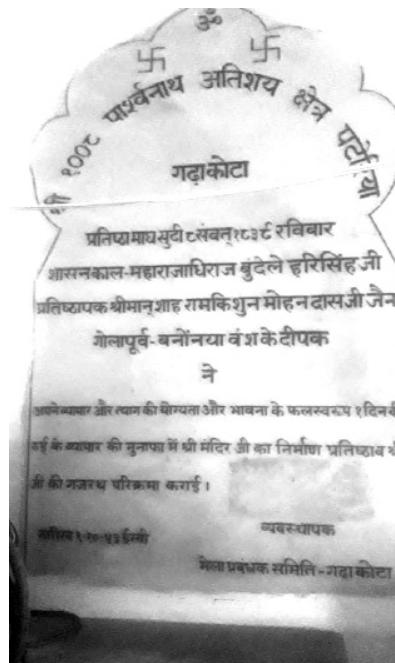
जैन समाजजनों की प्रभावी बस्ती गढ़ाकोटा के प्रत्येक प्रमुख मार्ग में जिन मंदिर हैं जो विशाल व मनोहरी हैं। श्री दिगंबर जैन चौधरी मंदिर, श्री दिगंबर जैन मंदिर पैलेपार, श्री दिगंबर जैन मंदिर छतपुरिया, श्री भजयाई दिगंबर जैन मंदिर, श्री नजयाई दिगंबर जैन मंदिर, श्री दिगंबर जैन बड़ा मंदिर दर्शनीय है। साथ ही समय की आवश्यकता अनुरूप बस स्टैंड के समीप पथरिया रोड पर भी श्री शांतिनाथ मंदिर का निर्माण हुआ है। श्री कुंदकुंद परमागम ट्रस्ट द्वारा भी एक मंदिर बड़े मंदिरजी के पास बनवाया गया है।

• अतिशयकुञ्ज •



अतिशयों की प्रवाहशीलता

जिस प्रतिमा के प्रभाव से व्यक्ति रत्नत्रय की प्राप्ति का धर्माराधना कर स्वयं भगवान बन सकता है, जिस भूमि का निर्माण ही परम पवित्र भावना से हुआ हो वहाँ लौकिक इच्छाओं की पूर्ति व अतिशय होना स्वाभाविक प्रक्रिया ही बनाते हैं कि इस मंदिर को घुनधुनिया मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मध्यरात्रि में देवों द्वारा भगवान की भक्ति की आवाजें सुनी जा सकती हैं। भट्टरक श्री महेन्द्रकीर्ति द्वारा अभिमंत्रित अतिशय स्तम्भ के स्पर्श से ज्वर पीड़ित का ज्वर उत्तर जाता है। सन् 1992 की घटना जो 20 अगस्त 1992 को हुई। सायं 7 बजे अशोकनगर का विन्यांजलि यात्रा संघ के समक्ष भक्ति के दौरान तीनों प्रतिमाओं से अचानक जल प्रवाह होने लगा जो रात्रि एक बजे तक अनवरत जारी रहा। पूरा नगर पटेरियाजी पहुँचा व इस कलयुग



में चैतन्य चमत्कारी का यह चमत्कार देखकर आश्चर्यचकित हुआ। इस तरह अनेक घटनाएँ क्षेत्र पर घटित हुई हैं।

आइये, एक बार तो चलें पटेरियाजी

भारत देश के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड में सागर जिला मुख्यालय से दमोह-जबलपुर मार्ग पर 45 कि.मी. दूर यह तीर्थ स्थित है। समीपस्थ रेलवे स्टेशन पथरिया, दमोह, सागर है जहाँ से गढ़ाकोटा के लिए हर समय बस सुविधा भी उपलब्ध है। सर्वसुविधायुक्त तीर्थ आज भी विकास की बाट जोह रहा है। सुविधाओं को निरंतर बढ़ाना समय की माँग है।

आइये, सपरिवार चलें पटेरियाजी और श्रावक शिरोमणि श्रीमान शाह रामकिसुन मोहनदासजी जैन की निर्मलता को महसूस करें। पार्श्व प्रभु के चरणों में अपनी भावनाओं को पंख लगाएँ और अपनी चंचला लक्ष्मी के सदुपयोग के लिए।

स्टेट बैंक के खाता नंबर 11316156245

आईएफसी कोड SBIN0006138 व

यूनियन बैंक खाता नं. 325502010004594

आईएफसी कोड UBIN0532550

का सदुपयोग करें। क्षेत्र से कुंडलपुर 70 कि.मी., नैनागिरी 100 कि.मी., पटनांगंज 20 कि.मी., बीना बारहाजी 50 कि.मी., कोनी पाटन 100 कि.मी., मढ़ियाजी जबलपुर 140 कि.मी. दूर है। क्षेत्र का मोबाइल नंबर 9300581108, 9302276765 है, जिस पर सम्पर्क किया जा सकता है।

पटेरिया तीर्थ के बारे में विस्तृत जानकारी डॉ. भागचंद्र जैन 'भागेन्द्र' दमोह द्वारा लिखित पटेरियाजी गढ़ाकोटा दीपिका व क्षेत्र कमेटी के समर्पित पदाधिकारियों व स्वयं अवलोकन द्वारा प्राप्त हुई है। चित्र भी गढ़ाकोटा के समर्पित जनों ने उपलब्ध कराए हैं। सबका धन्यवाद। लिखने की प्रेरणा मेरे पूज्य पिता श्री पूर्नचंद्रजी जैन, महासभा के महामंत्री श्री सुभाष चौधरी गढ़ाकोटा व पटेरिया के मंत्री रहे स्व. श्री बालचंद्र जी सेठ ने अनेक वर्षों पूर्व दी थी। जय पाश्वनाथ, जय पटेरिया। ■

कोरोना वायरस

यह समय अन्तर्मनन और अन्तर्याग्रा का



» डॉ. सुनील जैन 'संचय'
ललितपुर (उ.प्र.) मो. 9793821108
ई-मेल : Suneelsanchay@gmail.com

आज भौगोलिक दूरियाँ कम हुई हैं। संसार 'ग्लोबल विलेज' जैसा बन गया है। साधन-सुविधाओं में बेतहाशा वृद्धि हुई है। साधनों के इस अंतर में, सुविधाओं की इस विपुलता में कुछ खोया है तो वह है- भावना, संवेदना तथा इनके संवेदनशील तारों से बने-बुने इनसानी रिश्ते। एक और भौगोलिक दूरियाँ कम हुई हैं तो दूसरी ओर भावनात्मक दूरियाँ बढ़ी हैं। इन दोनों के घटने-बढ़ने का अनुपात समान है। आज सुदूर देश एवं विदेशी महानगर का कोई कोना हमारी पहुंच से परे नहीं है, परंतु एक ही मजिल पर रहने वाले दो पड़ोसी आपस में एकदम अनजान एवं अजनबी हैं।

आज भौतिक सुख-सुविधाएं बेहताशा बढ़ी हैं लेकिन पहले भले ही भौतिक सुख-साधन नहीं थे फिर भी आत्मिक सुख-शांति, अपनापन खूब था। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि- 'जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है, पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना जरूरी है।' आज कुछ दौर ऐसा चल रहा कि रिश्तों में न चाहते हुए भी अनौपचारिकता नहीं रह गई है। वो प्यार, अपनत्व, स्नेह, सम्मान सब खत्म होता जा रहा है जो पहले हुआ करता था। हम और आप ही हैं जो इन बेमानी, बेरंग, बोझिल हुए रिश्तों में फिर से प्रेम-लगाव, अपनेपन का रंग भर इन्हें सजीव कर जिन्दगी में खुशियाँ ला सकते हैं। आज मैं, मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे बस यही परिवार की परिभाषा रह गई है, हर कोई इसी में खुश व संतुष्ट हो रहा है।

साधन और सुविधाओं के वैभव का अपना महत्व एवं आकर्षण है। इसे नकारा नहीं जा सकता और न इनकार किया जा रहा है। इसके कारण कार्यक्षेत्र व्यापक हुआ है और साथ ही कार्यक्षमता में भी बढ़ातरी हुई है, परंतु इसने मनुष्य को एक मशीन बनाकर रख दिया है। अतुल संपत्ति-संपदा के स्वामी बन जाने के बावजूद हमारे पास निजी संबंधों के निर्वाह के लिए समय नहीं रह गया है। अब तो अपने प्रिय लाडलों के साथ दो पल बिताने का समय नहीं रहा। मनुष्य यंत्रवत् जिंदगी जीता चला जा रहा है। उसके पास भावनात्मक सुकून देने वाले मार्मिक क्षण कहाँ हैं! परिस्थितियों ने इनसान

को एक प्रकार की बायोमशीन बना दिया है। इसकी बुद्धि और कार्यक्षमता के आधार पर ही इसकी बोली लगाई जाती है अर्थात् तनखाह मिलती है। धन से सम्पन्न ही सुखी और संपन्न माना जाने लगा है।

संचार के इस युग में दूरियाँ मिट गई हैं। द्रुतगामी यातायात के साधनों से महीनों का सफर घंटों में सिमट गया है और टेलिकम्यूनिकेशन से अब कनाडा एवं आस्ट्रेलिया में रहने वाले व्यक्ति से ऐसे बातें होती हैं, जैसे वह कोई हमारा पड़ोसी है, परंतु ठीक इसके विपरीत हमारे पड़ोसी की दूरियाँ भी उतनी ही बढ़ गई हैं, जैसे वह कहीं सुदूर देश में रहता हो। याँत्रिकी साधनों ने सुविधाएं तो दी हैं, परंतु इसमें भावनात्मक विलगाव एवं अलगाव बहुत हुआ है। हम एक यंत्र बनकर रह गए हैं। हमारे अंदर की संवेदना, भावना सूख गई हैं।

एक समय था किसी गाँव में आने वाली वधु उसके मायके के गाँव के प्रायः सभी नामों से परिचित होती थी और मायके वाले गाँव के लोग जब भी उसके घर के पास से गुजरते तो उसे अपनी बेटी के समान यथायोग्य उपहार, फल, मिठाई आदि पहुंचाकर जाते थे। अपनी संस्कृति की यह सुदृढ़ परंपरा हमको आपस में एक-दूसरे से बाँधती थी। दिन भर कड़ी मेहनत करने के बाद शाम एवं रात के समय चौपाल में आपस में मिलकर अपने सुख-दुख बोलते-बताते थे। यह एक प्रकार की ग्रुप काउंसिलिंग थी, जो सबको



अपनी समस्याओं को कहने, समझने एवं उनके निदान का मौका देती थी। तब अनेक अभावों की जिंदगी भी बड़ी सुकूनदायक थी, क्योंकि हम सब आपस में भावनात्मक रिश्तों से बंधे होते थे। कोई भी रिश्ता आपसी समझदारी और निः स्वार्थ भावना के साथ परस्पर प्रेम से ही कामयाब होता है। यदि रिश्तों में आपसी सौहार्द न मिटने वाले एहसास की तरह होता है तो, छोटी सी जिंदगी भी लंबी हो जाती है। इंसानियत का रिश्ता यदि खुशहाल होगा तो देश में अमन-चैन तथा भाई-चारे की फिजा महकने लगेगी। विश्वास और अपनेपन की मिठास से रिश्तों के महत्व को आज भी जीवित रखा जा सकता है। वरना गलत फहमी और नासमझी से हम लोग, सब रिश्ते एक

दिन ये सोचकर खो देंगे कि वो मुझे याद नहीं करते तो मैं क्यों करूँ?

बेशक आज हमारे पास पूर्वजों के समान अभाव नहीं है न ही उन जैसी कठिनाइयाँ ही हैं। आज हम अत्याधुनिक युग में रहते हैं, परंतु जो चीज़ खो गई हैं, वे हैं हमारे मधुर संबंध, संवेदनशील रिश्ते एवं इन रिश्तों की महक। आज हम सुविधा-साधनों के शिखर पर पहुंचकर भी आंतरिक दरिद्रता से ग्रस्त हैं। हमारे पास सब कुछ है। खाने एवं रहने के लिए तरह-तरह की भोजन-सामग्री, फाइवस्टार होटल आदि आवागमन के लिए लक्जरी गाड़ियाँ, तमाम प्रकार के अत्याधुनिक उपकरण, अकूट धन-संपदा आदि, परंतु इन सबके बीच हमसे खोया है तो आपसी विश्वास, सौहार्द, सहयोग-सहकार एवं बेहद अपनापन। साधनों के ढेर में हम अनजाने-अजनबी बनकर जाने क्या तलाश रहे हैं। यह ठीक है कि साधन-सुविधाओं की जरूरत पड़ती है, परंतु यही सब कुछ नहीं है, इसके अलावा भी कुछ चाहिए, जो दे सके दिल को सुकून और एक मुट्ठी अपनापन। इसी का अभाव हमें सता रहा है। हम अब इसकी खोज में बेतहाशा भाग रहे हैं, पर सही जगह तलाश नहीं रहे हैं, इसलिए यह मिल भी नहीं रहा है।

पहले लोग साधनों-सुविधाओं से रहित रेगिस्ट्रेशन में भी प्रेमपूर्वक रह लेते थे और इसकी वजह थी, प्रचुर मात्रा में उपलब्ध उनकी आँतरिक संपदा। सहयोग-सहकार के भाव से जीवनयापन करने वाले अनेक परेशानियों के बीच भी जी लेते हैं। अपनापन जहाँ होता है, सारे मतभेद भुला दिए जाते हैं। बुद्धि ही है, जो अपने और पराए का भेद करती है, पर दिल तो सबको अपना मानता है-भेद नहीं है उसमें और न वह भेद करना जानता है। यह स्वच्छ एवं साफ हृदय का परिचय है, जो आज हमसे खो गया है या हमने इसे खो दिया है।

हम भौतिक विकास की कितनी की बुलंदियों को क्यों न छू लें, आंतरिक विकास के अभाव में ये अधूरी अपांग एवं चुभन भरी ही रहेंगी। भौतिक जीवन के लिए भौतिक उपबिध्यों की जितनी महत्ता है, उतनी ही आवश्यकता आंतरिक विकास ही है। उपलब्धियाँ दोनों में होना जरूरी है। अगर ‘ग्लोबल विलेज’ के रूप में दूरियाँ कम हो रही हैं तो भावनात्मक दूरियाँ भी मिटनी चाहिए, अन्यथा एकांगी विकास की इस दौड़ में उपजी हताशा-निगराना एवं अनेक भावनात्मक दूरियाँ भावनात्मक एवं मानसिक विकारों से इनसान अपना बहुमूल्य जीवन गंवा सकता है। मनोवैज्ञानिकों की मानें तो समस्त मनोविकार दबी-कुचली-मसली भावनाओं के परिणाम हैं। आधुनिक युग की इस दौड़ में बहुत आगे निकल जाने वाले इंसान की समस्या यही है। अतः उसे भौतिक उपलब्धियों के सहकार, सहयोग, सेवा, अपनापन आदि से ही पाया जा सकता है। इससे सभी प्रकार की दूरियाँ मिट सकती हैं और सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। यही है आज का समाधान। हमारी मानवता कहाँ जा रही है। अपनों के सुख-दुख में शरीक होने की बात तो अब मानों दूर की कोड़ी सा हो गया है। इंटरनेट के इस दौर ने हमारी युवा पीढ़ी को इतना भ्रमित कर दिया है कि वह दिशा ही भटक गया है। अपनापन जैसे शब्द अब उन्हें कोई मायने नहीं रखते। फेसबुक और इंटरनेट के भयावह परिणाम आये दिनों अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं, तथा अनेक लोग खुद उनसे रुबरू भी होते हैं, लेकिन उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। आखिर हम कहाँ जा रहे हैं? जरा सोचिए।

आज की युवा पीढ़ी फेसबुक पर हजारों मित्र बनाकर इतरा रही है,

लेकिन अपने ही सगे भाई से बोलचाल नहीं है, पड़ोसी को जानता नहीं है, माँ पिता के प्रति उसका अच्छा व्यवहार नहीं है, और फेसबुक पर जिनको वह जानता भी नहीं है उन्हें अपना मित्र बनाकर इठला रहा है। फेसबुक, व्हाट्सप्प जैसी सोशल मीडिया आधुनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई हैं। इसकी सहायता से आप अपने मित्रों के साथ तुरन्त और वास्तविक समय में जुड़ सकते हैं। उपयोगकर्ता एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं, बार-बार जुड़ सकते हैं और समूहीकरण कर सकते हैं। कई उपयोगकर्ता सोशल मीडिया पर समय गुजारते हैं लेकिन सोशल मीडिया का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग गंभीर लत का कारण बन सकता है। सोशल मीडिया गतिविधियों के साथ आनंद लेने की भावना हमारे मस्तिष्क के केन्द्र की उत्तेजना के कारण जाग्रत होती है। इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग एकाग्रता को भाँग करने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग मस्तिष्क को थकान और तनाव की ओर ले जाता है। सोशल मीडिया का उपयोग करते समय हमें बहुत ही सावधानी बरतने की जरूरत है।

चेहरा समाज से कटकर भी, इंसान सोशल हुआ जा रहा है।

पर फेसबुक सी गैनक है, दिल व्हाट्सप्प हुआ जा रहा है।

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में लोगों की जीवनशैली में बड़ा बदलाव किया है। जीवनशैली में आए इस बदलाव ने जहाँ लोगों को कई महत्वपूर्ण सबक सिखाए हैं वहाँ कुछ देशों में जीवन बिल्कुल अस्त-व्यस्त हो गया है। आज कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग के माहौल में चारों तरफ की शाँति हमें यह सोचने को मजबूर कर रही है कि आखिरकर जिंदगी की अब तक की आपाधारी में हमने कितना कुछ खो दिया है। जीवनयात्रा के जीने के तौर-तरीकों पर भी सोचने पर हमें मजबूर किया है। इस महामारी ने हम सब में सहनशक्ति और संयम का संचार किया है। मानव सभ्यता के विकास की होड़ पर इसने इक प्रकार से ब्रेक लगा दिया है। हम सब अपने-अपने घरों में कैद हैं। हमारे जीवन में शायद यह पहली घटना है कि डर से ही सही हम अपने-अपने परिवारों के साथ हैं। यह अवधि एक अवसर की तरह है, उन सभी चीजों को करने का, जो अक्सर भाग-दौड़ भरी जिंदगी में छूट जाती हैं। सचमुच यह आँतरिक यात्रा का समय है। हमें इस वैश्विक महाबंदी के कारण दुनिया को सामाजिक दूरी बनाने और खुद अलग रहने की कला सीखना होगी। अपने बंद घर में रहने के कारण खुद को जानने का मुश्किल, कठिन मौका मिला है। हमें खुद के अंदर झाँकने की सीख भी मिली है। हमें अपने परिवार के सदस्यों को समझने और उनकी आदतों को जानने का मौका मिला है। ऐसे मुश्किल समय में हमें सामाजिक दूरी से निकल कर अंतरात्मा की खोज में लगना होगा। हमें अन्तर्मनन करने के लिए इस समय का उपयोग करना चाहिए। आधुनिक और प्रकृति के विपरीत जीवनशैली को बदलना होगा, प्रकृति और पर्यावरण की ओर हमें लोटना होगा। यह संक्रमण मानवीय संकट ही है। मानवता जरूर इससे पार पाएगी।

रिश्तों की अहमियत को समझें, अपने इन मीठे रिश्तों के लिए भी वक्त निकालें और अपनों के साथ भी वक्त बिताएँ। अपनों के साथ बिताये वक्त जो खुशी आपको देगा वो आपको दुनिया में कहीं न मिलेगा। आज के इस बदलते परिवेश ने हमें सीख दी है कि रिश्तों को सिर्फ सोशल मीडिया से ही निभाने की आदत से हमें बाहर निकलना होगा। ■



जन-जन के भगवान् महावीर



» सुबोध मलैया

सागर (म.प्र.)



भगवान् महावीर की जन्म-स्थली कुण्डग्राम (वासोकुण्ड) में जैन धर्मावलंबी समाज नहीं है पर यहाँ के नाथ वंशी क्षत्रिय परिवार के आधिपत्य में भगवान् महावीर की जन्म-स्थली अहल्य भूमि के भूखण्ड वासोकुण्ड में उस पर हल न चलाने की शताब्दियों पुरानी परम्परा है। यहाँ के लोगों में भगवान् महावीर के प्रति आस्था और विश्वास उनकी लोक चेतना, उनके लोक गीतों में बसी हैं। भगवान् महावीर को विवाह का निमंत्रण भेजने, वर को आशीर्वाद हेतु अहल्य भूमि ले जाने और भगवान् महावीर के निर्वाण दिवस पर दीपक जलाने की पुरातन परम्परा आज भी कायम है।

भगवान् महावीर आज भी ऐतिहासिक चरित्र के रूप में सर्वमान्य हैं, भगवान् महावीर उत्कृष्ट यथार्थवादी थे, तीर्थकर महावीर एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जहाँ से निसृत अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की प्रकाश-किरणों ने इतिहास को आलोकित किया है। भगवान् महावीर ने कठोर तपस्या करके वीतरागी अर्हन्त पद को प्राप्त किया, समस्त मानव समाज को आत्मोत्थान का हितोपदेश देकर जन-जन के कल्याणकारी कार्य किए अतः वे युगान्तकारी नवयुग के प्रवर्तक माने जाते हैं। युगीन रूढ़ि, परम्परा, वर्ण, वर्ग, लिंग भेद, नारी दासता, विषमता आदि के प्रति विद्वेष करके मानवता, समतावादी मान्यताओं की स्थापना की। भौतिक जीवन के प्रति निवृत्ति-व्यक्ति अपनाते हुए भी वे आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में कार्य प्रवणशील प्रवृत्ति से क्रान्तिकारी महामानव बने। भगवान् महावीर ने मानव समाज को पाश्विक मनोवृत्तियों से निकालकर नैतिक जागरण के पथ पर चलने को प्रेरित किया वे तो आत्मानुभूति और समाज में आध्यात्मिक नैतिक मूल्यों के सृजन, उनका सामाजिक समस्याओं से पलायनवाद का न होकर उनके स्थायी और आधारभूत हल को ढूँढ़ निकालने, तीर्थकर भगवान् महावीर के चरित्र में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है वे वीतरागी होते हुए भी चतुः संघ के कर्णधार थे। भगवान् महावीर का आध्यात्मिक व्यक्तित्व जितना महत्वपूर्ण, उतना ही उनका विश्व मानव कल्याणकारी सामाजिक व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। भौतिक जीवन के सर्वस्व को

त्यागकर बने वीतरागी पुरुष ही संसार में महान् क्रान्ति, महान् कार्य करके 'महावीर' बनते हैं। भगवान् महावीर का तीर्थकरत्व का व्यक्तित्व कर्तव्य सम्पन्न, वीतरागता के साथ समाज कल्याण परक था अतः युग-युग तक वे पूजे जा रहे हैं। भगवान् महावीर ने यह संदेश दिया कि परस्पर लड़े नहीं, लड़ना ही है तो अन्तर के विकारों से लड़ो, अपने अन्तर को झकझोरों, सुख-समृद्धि और शान्ति अपने अन्तर में ही मिलेगी, अन्यत्र नहीं, ऐसी अन्तर्मुखता ही भारतीय जैन संस्कृति की महान् देन है।

भगवान् महावीर का जन्म 599 ईसा पूर्व, 19 मार्च, शनिवार, चैत्र मास शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी मध्य रात्रि को बुद्ध के जन्म से 36 वर्ष पहले, बिहार में वैशाली के पास कुण्डग्राम (वासोकुण्ड) में हुआ। भगवान् महावीर की जन्म-स्थली कुण्डग्राम (वासोकुण्ड) में जैन धर्मावलंबी समाज नहीं है पर यहाँ के नाथ वंशी क्षत्रिय परिवार के आधिपत्य में भगवान् महावीर की जन्म-स्थली अहल्य भूमि के भूखण्ड वासोकुण्ड में उस पर हल न चलाने की शताब्दियों पुरानी परम्परा है। यहाँ के लोगों में भगवान् महावीर के प्रति आस्था और विश्वास उनकी लोक चेतना, उनके लोक गीतों में बसी हैं। भगवान् महावीर को विवाह का निमंत्रण भेजने, वर को आशीर्वाद हेतु अहल्य भूमि ले जाने और भगवान् महावीर के निर्वाण दिवस पर दीपक जलाने की

पुरातन परम्परा आज भी कायम है।

भगवान् महावीर जैन धर्म के संस्थापक नहीं, मात्र धर्म सुधारक हैं उन्होंने नैतिक नियमों को नये सिरे से, नई दिशा में व्याख्या की। भगवान् महावीर ने आमजन को जो स्वतंत्रता प्रदान, जो गैरव और गरिमा दी वह अनूठी और अद्वितीय है विश्व इतिहास में ऐसा सम्मान किसी महामुख को नहीं दिया गया। साधारणतया मनुष्य में भी उतनी ही क्षमता है परमात्मा होने की जो उनमें थी। हर व्यक्ति में वही संभावनाएं हैं। सुख-दुख, पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, सफलता-विफलता अपने कर्मों पर आधारित है, अपने कर्मों के हम ही कर्ता हैं और उनका फल पाते हैं। महावीर ने कहा था - मिति में सत्त्व भुए सु बैरं मज्ज़ां न कैरवी- मेरी सारे प्राणियों से मित्रता है, मेरा किसी से बैर नहीं।

जैन धर्म के अनुयायी मूलतः दो सम्प्रदायों में विभाजित हैं, दोनों सम्प्रदायों के तात्त्विक चिन्तन में कोई मौलिक भेद नहीं, दोनों का अति प्रमाणिक ग्रन्थ तत्वार्थधिगम सूत्र है, महावीर के समय सभी एक थे करीब 300 वर्ष बाद पृथक हुए। 2300 वर्ष पूर्व देश में दिग्म्बर जैन समाज की बहुतायत थी। मुस्लिम शासकों ने दसवीं सदी के आसपास दिग्म्बर होने पर रोक लगा दी थी।

महावीर का मार्ग समर्पण, भक्ति का नहीं, ज्ञान का, श्रम का है। यह जैनों की श्रमण परम्परा का परिष्कृत स्वरूप है। क्षत्रियों द्वारा प्रतिपादित श्रवण परम्परा, ब्राह्मण परम्परा के विरोध में महावीर से पहले से प्रचलित थी, भगवान् महावीर ने उसकी विसंगतियों और शिथिलताओं को परिष्कृत कर उसे पूर्ण वैज्ञानिक आधार दिया। भक्ति, चमत्कार, कृपा, आशीर्वाद आदि को नकारा, उनका मार्ग शाश्वत है और उसकी सार्थकता आज भी है और हमेशा रहेगी, महावीर, विचारक, दार्शनिक, नीतिज्ञ, त्यागी, तात्त्विक या उपदेशक न होकर एक क्रान्तिकारी साधक हैं वे सत्य, जीवन की जटिलताओं का

विवेचन नहीं करते, धारणायें, विचार या सिद्धांत प्रतिपादित नहीं करते, वरन् आत्मज्ञ, मुक्ति-खोजी स्वानुभाव से प्राप्त विशुद्ध आत्म दर्शन के साधक हैं।

भगवान् महावीर ने धर्म, जाति, लिंग-भेद आदि को नकारा, उनके अनन्यतम शिष्य (गणधर) इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण थे, दीक्षित होने पर पहला आहार भगवान् महावीर ने एक ब्राह्मण के घर लिया, चन्दनबाला (दासी) के हाथों से आहार ग्रहण किया। हर जाति, धर्म और सम्प्रदाय के अनुयायी उनके शिष्य बने, स्त्रियों को उन्होंने पुरुषों के बराबर स्थान दिया उन्हें संघ में शामिल कर दीक्षित किया। धर्म को वैयक्तिक माना, सामाजिक और साम्प्रदायिक नहीं, उनके मतभेद वैचारिक और सैद्धान्तिक थे, साम्प्रदायिक या जातीय स्तर पर नहीं।

तीर्थकर भगवान् महावीर का सम्पूर्ण भारत में लगभग तीस वर्ष तक धर्मोपदेश व विहार होता रहा, उनके विहार की अधिकता के कारण भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग ही 'बिहार' के नाम से जाना जाने लगा। बिहार प्रान्त के कई बड़े बड़े नगर 'वन्द्रमान', 'वीरभूमि' उनके नाम पर बसे, उनके चिन्ह के नाम पर 'सिंह भूमि' नगर बसा है।

भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित पाँच महान् आदर्श यदि हम अपने जीवन में उतार उन्हें व्यावहारिक रूप में अपना लें, तो निश्चित ही आत्म-शान्ति के साथ-साथ विश्व शांति की दशा में अग्रसर होंगे। भगवान् महावीर के उपदेशों को आज उन्हें अपने जीवन में उतारने का सबसे ठीक समय आ पहुंचा है, क्योंकि जैन धर्म का तत्त्व ज्ञान, अनेकान्त पर आधारित और जैन धर्म का आधार अहिंसा पर प्रतिष्ठित है। जैन धर्म कोई पारम्पारिक विचारों, ऐहिक व पारलौकिक मान्यताओं पर अन्य श्रद्धा रखकर चलने वाला सम्प्रदाय नहीं वह मूलतः विशुद्ध वैज्ञानिक धर्म है। भगवान् महावीर के मार्ग पर चलने की, उन्हीं की तरह मुक्त होने की कोशिश निरन्तर की जानी चाहिए। ■

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्वावलंबी महिलाओं का सम्मान

सागर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर गोलापूर्व इकाई 1 व 2 द्वारा स्वावलंबी महिलाओं का सम्मान गैराबाई मंदिर कटरा में किया गया। इसमें श्रीमती अनिता चंदानी, श्रीमती केशर, श्रीमती पुष्पा, श्रीमती प्रभा आदि सम्मानित हुईं। ये सभी महिलाएँ फिजियोथेरेपी, गृह उद्योग, ब्यूटीशियन आदि क्षेत्रों में बहुत ही निपुणता से कार्य कर रही हैं। सम्मान श्रृंखला के साथ ही गैराबाई महिला मंडल के साथ महिला दिवस पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें सुषमा, मुक्ति, रक्षा, स्नेहलता, मनीषा, सविता, ममता आदि लगभग 15 से 20 महिलाओं ने अपने विचार रखे। आयोजकों द्वारा सभी को पुरस्कृत किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता गोलापूर्व महिला इकाई की संरक्षिका श्रीमती डॉ. आशा जैन ने की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अखिल भारतीय महिला परिषद की प्रांतीय सह संगठन मंत्री श्रीमती दीपि चंदेलिया थीं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से गोलापूर्व महिला इकाई 1 की अध्यक्ष श्रीमती आशा सेठ, गोलापूर्व महिला इकाई 2 की अध्यक्ष श्रीमती



निधि जैन खाद, अ.भा.व. चंद्रप्रभु शाखा अध्यक्ष श्रीमती अर्चना जैन खाद, गौराबाई महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती अंजना सेठ, शांतिनाथ शाला अध्यक्ष श्रीमती अंजु सेठ, महावीर शाखा अध्यक्ष श्रीमती सुनीता पड़वार, गोलापूर्व महिला इकाई की सचिव कोषाध्यक्ष श्रीमती मृदुलता, श्रीमती मंजु मगन के साथ कई जैन संस्थाओं के पदाधिकारी मंच पर विराजमान थे। साथ ही महिला जैन मिलन से श्रीमती किरण जैन उपस्थित थीं। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती हिमांशी मगराधा, सचिव गैराबाई महिला मंडल एवं श्रीमती निधि खाद ने किया। मुख्य रूप से वकाओं ने बताया कि आज महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ खड़ी हैं। कंधे से कंधा मिलाकर उनके साथ कार्य कर रही हैं। घर गृहस्थी के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से अंजु, सुषमा पिढ़रुआ, सुषमा गौना, सविता पड़वार, सुश्री मुक्ति, मंजरी, शिवनी, ज्योति, साधना पिढ़रुआ, ममता, सीमा, रक्षा आदि बड़ी संख्या में महिलाएँ मौजूद थीं। ■



दिव्य दिवा भोजन

जैनत्व के साक्षी वैज्ञानिक शोध



» अजित जैन 'जलज'

प्रांतीय समन्वयक करुणा अंतर्राष्ट्रीय मध्यप्रदेश
मधु ज्वैलरी राजमहल रोड, टीकमगढ़ (म.प.)
मो. 9926565711

मध्य का त्याग लगभग सभी धर्मों में है, माँसाहार का त्याग हिंदू एवं बौद्ध धर्म में प्रमुखता से है, मध्य माँस मधु का त्याग जैन धर्म की विशिष्ट पहचान है हालांकि विश्वव्यापी वीगन समुदाय भी इनका सेवन नहीं करता है। पंच उदम्बर फलों का त्याग भी जैनधर्म की विशिष्टता है परंतु छने पानी का सेवन एवं दिन में भोजन जैनों की सबसे जानी मानी पहचानें हैं। छने पानी पर विश्वव्यापी कार्य हो रहा है और अब स्वास्थ्यगत समस्याओं के चलते वैज्ञानिकों का ध्यान भोजन के समय पर भी गया है। चिकित्सा शास्त्री तो पहले ही जल्दी भोजन लेने के पक्षधर रहे हैं। भारत सरकार महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से आगमन के 100 वर्ष पूरे होने पर आयोजन रख रही है। संयोगवश 1915 में ही गांधी ने रात्रि भोजन का त्याग कर दिया था। गांधी का भारत आगमन फिर रात्रि भोजन त्याग के साथ ही अहिंसक आंदोलनों का सूत्रपात और अहिंसा की दिग्विजय। विश्व में जैनों की संख्या बहुत कम बची है। जितने हैं वो भी आपस में लड़ने में व्यस्त हैं। ऐसे में हमें अप्रमत्त होकर जैनत्व का जागरण करना चाहिए।

जब राम और सीता के साथ लक्ष्मण वन की जाने लगे तो लक्ष्मण ने वनमाला को समझाया कि मैं रामचंद्र जी को इष्ट स्थान पर पहुँचा कर वापिस आता हूँ। लक्ष्मण ने वनमाला को संतुष्ट करने के लिए गोहत्या, स्त्रीवध आदि के पापों से लिस होने की अनेक कसमें खाई परंतु वनमाला ने लक्ष्मण से यह शपथ कराई कि राम को इष्ट स्थल में पहुँचा कर यदि मैं वापिस नहीं आऊं तो रात्रि भोजन के पाप से लिस होऊँ। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में रात्रि भोजन बड़ा भारी पाप समझा जाता था।¹

इसी प्रकार चित्रकूट नगर में एक चाण्डालिनी ने रात्रिभोजन त्याग ब्रत लिया। पहर भर में ही दुष्ट पति द्वारा मार दी गयी परंतु वह ब्रत पर अडिग रही जिसके प्रभाव से वह सागरदत्त नामक सेठ की कन्या नागश्री हुई।²

इन कथानकों से जैनधर्म में रात्रिभोजन त्याग का महत्व प्रदर्शित होता है। जीवदया प्रेमी जैन की सबसे बड़ी पहचान रात्रिभोजन त्याग से बनी हुई है। दिवा भोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से तो उत्तम है ही इसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनाकर और भी महिमामंडित कर दिया है। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों ने दिवा भोजन को प्राकृतिक बताकर जैनत्व का जयघोष ही किया है। अतः अब हम सब का भी यह कर्तव्य बनता है कि हम भी इस दिशा में कुछ करें जिससे

कि हमारी यह पहचान एक रुद्धी या इतिहास बनकर ही न रह जाये।

आगम में दिवा भोजन की दिव्यता

रात्रिभोजन त्याग के लिए एक सकारात्मक शब्दावली दिवा भोजन दी जाती है अंग्रेजी भाषा में इसे Supper (दिन का अंतिम भोजन) कहा जाता है तो बुन्देली भाषा में अन्थउ शब्द के द्वारा ही लोग जैनों को जान जाते हैं।

वर्धमान पुराण में बुन्देली महाकवि नवलशाह कहते हैं
दोय घरी रवि उदय प्रमान, दोय धरी अंतिम दिन जान।
इतने में भोजन जल लेइ, मैथुन दिवस हि त्याग करेइ॥
इहि विधि किरिया जे जन करें, सो श्रावक अंथउ ब्रत धरें॥³

पं. आशाधर ने श्रावकों के तीन भेद किये हैं। पाक्षिक, नैष्ठिक एवं साधक, उनमें श्रावक धर्म का अभ्यास करने वाला पाक्षिक श्रावक कहलाता है।

सागर धर्मामृत का कथन है कि- 'पाक्षिक श्रावक अपने आश्रित मनुष्य और तिर्यंचों को और आजीविका के न होने से दुखी अनाश्रित मनुष्य व तिर्यंचों को भी दया से भोजन कराकर दिन में ही भोजन करे और जल, दवा, पान और इलायची आदि रात्रि में भी खा और खिला सकता है।'⁴

राष्ट्रपिता द्वारा रात्रि भोजन का त्याग

महात्मा गांधी ने जैनधर्म से प्रेरणा लेकर जिस प्रकार से जैनत्व को जिया एवं अहिंसा को विश्व व्यापी प्रतिष्ठा प्रदान की उस प्रकार का प्रभावी कार्य महावीर स्वामी के बाद विरला ही दिखाई देता है, हालांकि इसका महत्व अब तक जैन समाज स्वीकार नहीं कर पाया है। वस्तुतः महात्मा गांधी का पूरा जीवन ही हिंसा से अहिंसा की ओर पथयात्रा में प्राप्त अभूतपूर्व आत्मशक्तियों का प्रकटीकरण ही है।

यदि शाकाहार एवं जीवदया के जीवन अंशों को लेकर बापू के जीवन चरित को नये ढंग से लिखा जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार शनै:-शनै: शाकाहारी पद्धति स्वीकार करने के कारण उनके जीवन का विकास हुआ तथा उन्होंने जैन जीवन मूल्यों को दृढ़ता पूर्वक अंगीकार किया। ऐसा जीवन चरित लाखों करोड़ों लोगों को शाकाहारी बना सकता है तथा जैनत्व पर श्रद्धा का भाव भी बढ़ा सकता है।

मोहन की माँ पुतलीबाई धर्मनिष्ठ महिला थी। चातुर्मास का ब्रत करती थी। बापू कहते हैं - 'चातुर्मास्य में एक समय के भोजन का ब्रत तो उनके लिए साधारण बात थी। लगातार दो तीन उपवास उनके लिए मामूली बात थी। एक चैमासे में उन्होंने सूर्य नारायण के दर्शन करने के बाद ही भोजन करने का ब्रत लिया।'⁵

कहते हैं पुतलीबाई जैन थीं। उनके गुरु बेचरदास जी तो जैन थे ही तथा जैन गुरु रायचंद्र जी को तो महात्मा गांधी ने अपना मुख्य आध्यात्मिक गुरु माना ही है।

रात्रि भोजन त्याग का ब्रत महात्मा गांधी ने जिस कारण से लिया वह भी अपने आप में बहुत महत्व रखता है। 1915 में हरद्वार में कुंभ का मेला था। 'चारों ओर पाखंड पसरा था। जैसे कि पाँच पैरों वाली गाय तो दुष्ट लोभियों के लोभ की बलिरूप थी। यह पैर गाय के कंधे पर इस तरह लगाते कि बछड़े का जीता पैर काटते और गाय के कंधे को चीरते फिर दोनों को

जोड़ देते और यह दोहरा कसाईपन अज्ञानी मनुष्य को ठगने के लिए किया जाता था।⁶

ऐसे पाखंडों से व्यथित होकर ही गांधी जी ने कठिन व्रत लेने का निश्चय किया। बापू लिखते हैं- ‘मैंने खुराक की चीजों की हद बांध देने का और अंधेरे के पहले भोजन कर लेने का व्रत लेने का निश्चय किया। चैबीस घंटों में पाँच चीजों के सिवा और कुछ न खाने और रात में भोजन न करने का व्रत ले लिया। दोनों की कठिनाई का पूरा विचार कर लिया था। इन व्रतों में एक भी छूट न रखने का निश्चय किया। इन दो व्रतों को लिये तेरह बरस हो गये। इनसे मेरी अच्छी परीक्षा हो गई। पर जैसे मेरी परीक्षा हुई वैसे ये मेरे लिए ढाल रूप भी बन गये। मेरा विश्वास है कि इन व्रतों ने मेरी जिंदगी को बढ़ाया है। मैं मानता हूँ कि बहुत बार इनकी बदौलत मैं बीमारियों से बचा हूँ।’⁷

आधुनिक शोध मोटापे एवं रात्रि भोजन⁸

ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज रिपोर्ट 2012 (जिसको तैयार करने में पूरी दुनिया के 500 वैज्ञानिक शामिल थे।) के अनुसार पहली बार ऐसा हो रहा है कि अधिक भारजनित बीमारियों का भार भुखमरी से अधिक है। प्रत्येक वर्ष 280 लाख लोग मोटापे एवं अधिक भारी होने के कारण मर जाते हैं।

मोटापे के कारणों को विश्व भर के वैज्ञानिक ढूँढ रहे हैं। अरबों डॉलर की पूँजी मोटापे की दवा के अनुसंधानों पर लगायी जा रही है। मोटापे के मुख्य कारण - आनुवशिकता, माँसाहार, डेयरी उत्पाद, श्रम की कमी, हमारी आँतों में रहने वाले खरबों जीवाणुओं की विविधता में कमी है। अगर हम फल और सब्जी की प्रति व्यक्ति उपलब्धता ही बढ़ा दें तो लाखों लोग मरने से बच सकते हैं।

भोजन के समय को लेकर हुये आधुनिक अनुसंधानों ने रात्रि भोजन पर करारा प्रहर करते हुये इसे मोटापे से जोड़ा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी की अपनी कक्षा में परिभ्रमण के कारण हो रहे दिन एवं रात से स्पष्ट कोई भी वातावरणीय कारक नहीं है। यही कारण है कि हमारा व्यवहार और हमारे शरीर की रासायनिक प्रक्रिया सब कुछ इस रात दिन के कालचक्र में बंधी हुई है। जो लोग इस कालचक्र के साथ सामंजस्य नहीं बिठाते वो बहुत सी बीमारियों जैसे मोटापा, हृदय रोग, अवसाद और खान पान संबंधी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं।

अनादि काल से मनुष्य को भोजन मात्र दिन में मिलता रहा है। अब कृत्रिम प्रकाश एवं दिन रात खाने की अनियंत्रित प्रक्रिया से शरीर को अलग-अलग संदेश मिलते हैं जैसे रात के समय मुख्य घड़ी एससीएन संदेश देती है कि ये सोने का समय है और अब वसा के उपयोग का समय है। वही दूसरी घड़ियाँ जो भोजन आधारित हैं वो संदेश देती हैं कि भोजन मिल रहा है तो ये वसा के संग्रह का समय है। इन घड़ियों में सामंजस्य के अभाव के कारण मोटापे पर असर पड़ता है।

मस्तिष्क के हाइपोथेलेमस में लगभग 20000 तंत्रिका कोशिकाओं का समूह होता है जिसे एससीएन या मुख्यघड़ी कहते हैं जो कि दिन रात के सापेक्ष शरीर में समय का हिसाब रखती है।

यह घड़ी अपने समय के संदर्भ के लिये सूर्य के प्रकाश पर निर्भर करती

है। इसी प्रकार लगभग शरीर के हर हिस्से में एक घड़ी होती है। आंत में पाचन की तीव्रता दिन के समय पर निर्भर करती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि खाने के समय के कुप्रभाव के कारण कई प्रक्रियाएँ प्रभावित होती हैं। उनका कहना है कि कुछ ऐसे प्रोटीन हैं जिनको प्रभावी होने के लिये भूखा होना अर्थात् दो भोजन के समय में मुख्य अंतराल आवश्यक है।

रात्रि भोजन त्यागियों के लिए यह सहज सुलभ है। हावर्ड मेडिकल स्कूल के शोधकर्ताओं ने अन्य दल के साथ मिलकर स्पेन के 420 लोगों का अध्ययन किया जो वजन कम करने वाले एक कार्यक्रम का हिस्सा थे शोधकर्ताओं ने अन्य बातों के अलावा उनके भोजन करने के समय का भी ध्यान रखा। स्पेन में मुख्य भोजन दोपहर का भोजन होता है। आधे लोगों ने अपना दोपहर का भोजन शाम 3 बजे से पहले किया एवं आधे समूह ने उसके बाद दोनों समूह के लोगों ने एक समान खान पान नींद एवं व्यायाम किया। कार्यक्रम के अंत में देखा गया कि जो लोग समय से अर्थात् पहले खाने वाले थे तुलनात्मक रूप से वे ज्यादा वजन कम करने में सफल रहे।

स्वास्थ्य संबंधी सर्वसम्मत सोच

विशेषज्ञ से लेकर जन साधारण तक सब जानते हैं कि जल्दी सोना और जल्दी जागना स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है। सोते समय निश्चित रूप से अन्य जैविक प्रक्रियाओं की तरह पाचन की क्रिया भी मंद पड़ जाती है अतः अच्छे पाचन के लिए सोने से 3-4 घंटे पहले भोजन करना चाहिए। इस प्रकार से 9 से 10 बजे के बीच सोने के लिए 6 बजे के आस पास दिन में भोजन कर लेना ही स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम है।

रात्रि भोजन त्याग की प्रासांगिकता एवं हमारा कर्तव्य

1. जैन धर्म का मूल ध्येय जीवदया है परंतु जीवदया में ही स्वास्थ्य, सम्पन्नता, आनंद के सूत्र भरे पड़े हैं। रात्रि में कीड़ों की भरमार होती है। बरसात में बहुत से जैनेतर लोग भी रात्रि भोजन त्याग देते हैं जबकि अनेक जैन युवा एवं वृद्ध दिनरात खाने में व्यस्त रहते हैं। प्रारंभिक रूप से क्या हम चातुर्मास में दिवा भोजन अभियान का शुभारंभ नहीं कर सकते हैं?

2. बहुत लोगों को अपने पेशे की व्यस्तताओं वश अथवा अन्य मजबूरियों से कई बार रात में भोजन करना पड़ता है तो क्या इसे अपवाद समझकर सुविधा रहने पर दिन में ही भोजन नहीं कर सकते हैं?

3. रात्रि भोजन आधुनिक फैशन का पर्याय होता जा रहा है। देर रात तक चलने वाली जीवनचर्या और दिन चढ़ने पर जागने की अप्राकृतिक दिनचर्या को बदलने का साहस क्या हम नहीं कर सकते हैं?

4. ऊर्जा संकट के दौर में अगर हम सामूहिक रात्रि भोज एवं रात की शादियों पर रोक लगाने पर विचार करें तो हमें पुराने अभियानों की असफलताओं से चिन्तित नहीं होना चाहिए।

5. धार्मिक कार्यक्रमों में देर रात तक चलने वाले कार्यक्रमों एवं ध्वनिविस्तारक यंत्रों के बढ़ते उपयोग के संबंध में तो चर्चा करना भी खतरनाक है। क्योंकि इनसे आज जैन समाज का लगभग संपूर्ण कर्तार्थी वर्ग जुड़ा हुआ है। धार्मिक स्थलों पर, धर्म के नाम पर सर्वाधिक हिंसा रात्रिकालीन कार्यक्रमों में ही होती है। हमें इससे बचना चाहिए तथा साहस

के साथ आगे आना चाहिए।

6. जब जैन संस्थाओं अथवा व्यक्तियों से जुड़े सामूहिक भोजों में दिन ढलने के बाद भोजन शुरू होता है तो बड़ा कष्ट होता है और कई बार तो मुझ जैसे लोगों को भोजन से वंचित भी होना पड़ता है जबकि अनेक अजैन बंधु दिन में भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं। इस संबंध में समाज को सक्रिय होकर कड़ा सदेश देना चाहिए।

7. रात्रि भोजन त्यागी लोगों में से एक बहुत बड़ा वर्ग आमतौर पर नियमित रूप से सूर्यास्त के बाद ही भोजन करता है। दिन रात का यह संधि काल संध्या समय बहुत संवेदनशील होता है जिसमें छोटे छोटे जीवों की सक्रियता बहुत अधिक होती है अतएव ऐसे समय में भोजन से बचना चाहिए।

8. निशाचर प्रणाली में निमग्न जैन परिवारों अथवा व्यक्तियों के लिए वर्ष के कुछ दिनों, धार्मिक, पर्वों, सासाहिक या लम्बे अवकाश अवसरों पर सामूहिक दिवा भोजन अन्थु का विशेष आयोजन अवश्य रखना चाहिए।

9. आगम, तर्क, विज्ञान, तथ्य प्रमाण सब सत्य के उद्घोषक ही है।

कविता

कोरोना

कोरोना, घर से बाहर निकलो ना।

मृग मरीचिका में सीता ललचाई,
बहुरूपिया रावण ने भिक्षा पाई,
हुआ सीता हरण, लक्ष्मण रेखा लांघो ना।
कोरोना, घर से बाहर निकलो ना॥

पांचाली का अद्वृहास- अंधे का बेटा अंधा,
दुर्योधन का प्रतिहास- रचे चौसर का खेल गंदा,
हुआ चीर हरण, कटु वचन बोलो ना।
कोरोना, घर से बाहर निकलो ना॥

खत्म हुआ अज्ञातवास, पांडव माँगे राजपाट,
दुर्योधन करे उपहास, नहीं दूँगा कोई भू-भाग,
हुआ महाभारत, इतिहास दोहराओ ना।
कोरोना, घर से बाहर निकलो ना॥

टूट गया खान-पान का संयम, तार-तार हुई मर्यादा,
फूट गया नापाक जैविक बम, लाशें बिछ गई ज्यादा,
फैल गया वायरस, संक्रमण फैओ ना।
कोरोना, घर से बाहर निकलो ना॥

स्कूल, कॉलेज, कारखाने और यातायात सब बंद,
घर में कैद जनता और अर्थव्यवस्था मंद,
घटा प्रदूषण, रोड दुर्घटना की खबर आई ना।
कोरोना, घर से बाहर निकलो ना॥

» मनीष वर्मा, संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण, इंडॉर

एकांत में डूब लोग ही दूसरे पक्ष को दरकिनार कर देते हैं। अनेकांत मिथ्यात्व को भी सम्यक्त्व में बदल देता है अतः आगम के अनुसार चर्चा करें, चर्चा करें।

आभार : मैं डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्र दिल्ली का आभारी हूँ जिनका विज्ञान प्रगति में प्रकाशित आलेख पढ़ कर मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

संदर्भ

1. पं. आशाधर सागार धर्मामृत, विजया टीका, अध्याय 4 , श्लोक क्र. 26 पृ. 179
2. वही अध्याय 2 श्लोक क्र. 25 पृ. 55
3. नवल शाह, वर्धमान पुराण, 1999, श्री मज्जनेन्द्र पंचकल्याणक जिनविष्व मानसंभ प्रतिष्ठा उत्सव समिति ककरवाहा, टीकमगढ़ (म.प्र.) पृ. 135
4. पं. आशाधर, सागार धर्मामृत, विजया टीका अध्याय 2 श्लोक 76 पृ 114
5. गांधी मोहनदास करमचंद्र सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, 1996, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन एन 77 कर्नॉट सर्कस नई दिल्ली 1 पृ. 16
6. वही पृ. 362
7. वही पृ. 363
8. मिश्र, डॉ. ज्ञानेन्द्र, मायाजाल मोटापे का, विज्ञान प्रगति, अप्रैल 2014, सी.एस.आइ.आर, नई दिल्ली 12, पृष्ठ 7-12 ■

मुझे

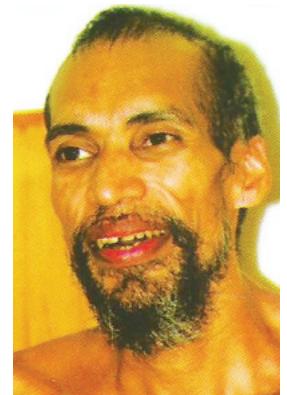
» मुनि क्षमासागर

मौत में जीवन के फूल चुनना है।
अभी मुरझाना,
टूटकर गिरना
और अभी खिल जाना है।

कल यहाँ आया था,
कौन कितना रहा इससे क्या?
मुझे आज अभी लौट जाना है।

मेरे जाने के बाद लोग आएं,
अर्थी संभाले,
कांधे बदलें,
इससे पहले मुझे खुद संभल जाना है।

मौत आए और जाने कब आएं,
अभी तो मुझे संभल-संभलकर
रोज-रोज जीना
और रोज-रोज मरना है।



मुनि श्री आज प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी शिक्षाएँ हमेशा हमारे साथ रहेंगी। मुनिश्री हम बच्चों को सदा अच्छा बनने की प्रेरणा देते थे और उनके प्रवचनों को सुनकर, मुनिश्री की कही हुई बातों को आत्मसात कर हम सभी अपने जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास निरंतर कर रहे हैं।

बुंदेलखंड के सर्वोदयी संत पूज्य गणेशप्रसाद वर्णोजी



» प्रो. सुबोध कुमार जैन

डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर

मैं अपने बचपन से पूज्य 105 क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णोजी के बारे में सुनता-पढ़ता रहा हूँ। सहज ही उनके प्रति मेरी गहन श्रद्धा है। वर्णोजी की जीवन गाथा जैन समाज में बड़े आदर के साथ पढ़ी जाती रही है। विगत दिनों जब मैंने इसे पुनः पढ़ा तो इसकी प्रति सहज नहीं मिल सकी। दिगंबर जैन महिलाश्रम, सागर के मंत्री श्री सुभाष जैन चौधरी ने इसे उपलब्ध कराया। पूज्य वर्णोजी पर समग्र जैन समाज की अगाध श्रद्धा है। अतः आवश्यकता है कि विशेष तौर पर युवा वर्ष उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जानें ताकि उनके बीच ऐसा संदेश पहुँचे जो समाज के लिए कल्याणकारी हो। उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले की महरौनी तहसील के हंसेरे गाँव में कवां वदी 4 संवत् 1931 को जन्मे गणेश प्रसाद, असाटी जाति के थे। जैनों के मुहल्ले में उनका घर था और घर के सामने जैन मंदिर। रोज शाम को प्रवचन सुनने चले जाते थे। एक शाम प्रवचन में त्याग का प्रकरण आया। उसी दिन आजन्म रात्रि भोजन त्याग दिया। इसी त्याग ने दस वर्ष की आयु में उन्हें जैन बना दिया। मिडिल क्लास तक पढ़ाई की। अगले चार वर्ष खेलकूद में बीते, फिर विवाह हो गया। मदनपुर गाँव, इंदौर और बाद में कारीटोरन गाँव में मास्टरी कर ली। नौकरी में मन नहीं लगा। अंततः तीर्थक्षत्रों की यात्रा और जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में लग गए।

वर्णोजी ने अपनी जीवन गाथा में लिखा है कि उनके जन्म के समय एक रुपया में एक मन (लगभग 40 किलो) से अधिक गेहूँ तीन सेरे धी और आठ सेर तिल का तेल मिलता था। सब लोग कपड़ा प्रायः घर के सूत का पहनते थे। सबके घर चरखा चलता था। खाने के लिए धी-दूध भरपूर मिलता था। यह गाँधीजी के ग्राम स्वराज की कल्पनार को साकार रूप में दर्शाता है।

मेरी जीवन गाथा के संपादक पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य पुस्तक के प्रारंभ में लिखते हैं कि वर्णोजी इस युग के सर्वाधिक श्रद्धा-भाजन व्यक्ति हैं। इन्होंने अपनी निःस्वार्थ सेवाओं के द्वारा जैन समाज में अनूठी जागृति कर उसे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया है जिससे जैन समाज का गौरव बढ़ा है। जहाँ तत्वार्थ सूत्र का मूल पाठ कर देने वाले विद्वान् दुर्लभ थे, वहाँ आज गोमटसार तथा धवलादि सिद्धान्त ग्रंथों का पारायण करने वाले विद्वान् सुलभ हैं। यह सब पूज्य वर्णोजी की सतत साधनाओं का ही फल है। पूज्य वर्णोजी की आत्मा सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र से प्रकाशमान है। बनारस में स्वाद्वाद विद्यालय और सागर में श्री गणेश दिगंबर जैन संस्कृत विद्यालय स्थापित कर जैन संस्कृत के संरक्षण तथा पोषण के



सबसे महान कार्य किये हैं। इतना सब होने पर भी वह अपनी प्रशंसा से दूर ही रहते हैं। जीवन गाथा लिखने के आग्रह पर वे कहते हैं कि जब कुंदकुंद, समन्भद्र जैसे लोक कल्याणकारी उत्तमोत्तम महापुरुष ने भी अपना चारित्र नहीं लिखा तो मैं अपनी जीवन गाथा क्यों लिखूँ। वर्णोजी की जीवन गाथा की प्रस्तावना में स्व. पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र जो मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री एवं सागर वि.वि. के कुलपति रहे, ने 2 अप्रैल 1949 को लिखा कि मेरा हृदय उनके प्रति अत्यंत श्रद्धालु है। उन्होंने जबलपुर के जैन समाज के लिए बहुत कुछ किया है। लोगों की धारणा है कि जैन दर्शन का मुझ पर बड़ा प्रभाव है। परंतु जैन समाज के ही शिक्षित नवयुवक अपनी बहुमूल्य सम्पत्ति को छोड़ भौतिकवाद अपनाते जा रहे हैं। भारत वर्ष में दार्शनिक विचारों की धारा सूख गई है। अपनी मणियों को तिरस्कृत कर हम काँच को ग्रहण करते जा रहे हैं। हमारे नवयुवक तो पारखी नहीं हैं। जब तक हम दोनों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनकी भूल न प्रमाणित कर देंगे, तब तक वे काँच को मणि समझकर ग्रहण करते जाएँगे। इसमें हमारे नवयुवकों की अपेक्षा हमारा ही अपराध अधिक है। कठिनाई यह है कि जो हमारे प्राचीन ग्रंथों के विद्वान हैं वे नई विचारधारा से अपरिचित हैं और जो नई विचारधारा में ढूबे हैं वे प्राचीन साहित्य के ज्ञान से कोरे हैं। जब तक दोनों का समन्वय न होगा, तब तक हमारा प्राचीन ज्ञान आज की संतति का उपकार न कर सकेगा। आज सारा संसार द्वेष जनित युद्धाग्नि में जल रहा है। प्रेम और अहिंसा के द्वारा हम इस अग्नि को बुझाकर संसार को शांति प्रदान कर सकते हैं। जैनियों ने अहिंसा को विशेष रूप से अपना रखा है। यदि वे उसे केवल उपदेश तक ही सीमित न रखकर वर्तमान युग की समस्याओं को हल करने में उसकी उपयोगिता प्रमाणित करने का भी प्रयास करें तो संसार के लिए प्रकाश स्तंभ सिद्ध होंगे।

वर्णोजी की सादगी देखिये, उन्होंने मेरी जीवन गाथा के विषय में अपना अभिमत लिखा “मैं अपनी जीवनी लिखूँ इसकी कल्पना स्वप्न में भी न थी, इसमें ऐसा है ही क्या। अधिकतर दूसरे भाई इसे जिस दृष्टि से देखते हैं उसमें मेरा कुछ भी आकर्षण नहीं है। न तो मैं शोधक हूँ न ही स्वतंत्र विचारक, मैं तो भगवान् महावीर के महान सिद्धान्तों का अनुयायी मात्र हूँ। मुझे उनके मार्ग अनुसरण करने में जो आनंदनुभव आता है वह बचनातीत है। आशा है इसके पाठकगण मात्र मोक्षमार्ग की शिक्षा लेंगे।” ■

अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की बैठक सम्पन्न

अ.भा. दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा की बैठक दिनांक 26 जनवरी 2020 (रविवार) को सम्पन्न हुई।

1. बैठक की कार्यवाई प्रारंभ करते हुए कार्यकारी महामंत्री श्री देवेन्द्र लुहारी ने विगत बैठक (राष्ट्रीय अधिवेशन) की कार्यवाही के विवरण का वाचन किया जिसकी सभी ने करतल ध्वनि से पुष्टि की।
2. युवा प्रकोष्ठ बनाने के संबंध में राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान महासभा द्वारा किए गए प्रस्ताव पर उनके द्वारा कहा गया कि युवाओं से चर्चा करने के बाद आगामी बैठक में विचार किया जा सकता है। साथ ही सभी से कहा कि सभी अपने-अपने क्षेत्र के सक्रिय युवाओं के नाम दें ताकि उनके नामों पर विचार किया जा सके।
3. आगामी परिचय सम्मेलन की तिथि/स्थल पर विचार :

(1) पं. श्री सनतकुमारजी रजवांस ने बताया कि मुहूर्त के अनुसार 17 एवं 18 अक्टूबर 2020 को अगले परिचय सम्मेलन के लिए शुभ है। जिस पर विचार-विमर्श करते हुए सभी की सर्वसम्मति से 17 एवं 18 अक्टूबर 2020 (शनिवार-रविवार) की तिथि आगामी परिचय सम्मेलन हेतु तय की गई।

(2) स्थल चयन पर श्री रविकांतजी मुनीम सा. ने एक ही स्थान नियत कर लेने की बात कही जिससे एवं जहाँ सभी को आने-जाने में सुगमता रहे।

(3) पं. श्री विनोदकुमारजी रजवांस ने सुझाव दिया कि मीटिंग किसी ग्राम, नगर में होना चाहिये जिससे वहाँ की समाज जुड़ सके, नए सदस्य बन सकें।

(4) अन्य समाज के परिचय सम्मेलन एक ही स्थान पर होने की चर्चा सामने आने पर श्री जिनेश जैन बहरोल ने कहा कि अन्य समाज के परिचय सम्मेलन क्षेत्रीय स्तर पर होते हैं। भोपाल, इंदौर, जबलपुर, विदिशा, सागर आदि में। लेकिन अपनी समाज का एकमात्र सम्मेलन होता है जो राष्ट्रीय स्तर का होता है। अतः जहाँ-जहाँ अपनी समाज है, वहाँ-वहाँ सम्मेलन किया जाना चाहिये ताकि इसका लाभ स्थानीय समाज को भी प्राप्त हो सके।

(5) श्री दीपचंद जैन शिक्षक दमोह ने कहा कि सागर समाज का मुख्यालय है। आवागमन के साधन हैं और यहाँ 2-3 सम्मेलन हो चुके हैं। अतः सागर में ही स्थायी तौर पर सम्मेलन होना चाहिये।

(6) महासभा के महामंत्री श्री सुभाष चौधरी ने कहा कि एक सम्मेलन में लगभग 16-17 लाख रु. खर्च होते हैं और विभिन्न व्यवस्थाओं हेतु लगभग 40 व्यक्ति अलग-अलग प्रयोजन के लिए चाहिये होते हैं। अतः इस पर विचार करना पड़ेगा कि हमें हर बार एक ही स्थान पर सम्मेलन करने हेतु भोजन, आवास, नाश्ता आदि सभी प्रयोजन के लिए प्रयोजक मिल सकेंगे या नहीं। अतः आर्थिक स्रोत को भी ध्यान रखना चाहिये। कोतमा में सम्मेलन करने पर वहाँ के लगभग 180 बच्चों के संबंध तीन साल के अंदर हुए। विभिन्न स्थानों पर सम्मेलन करने पर अंतर तो पड़ता है।

(7) श्री दिलीपजी जैन आयकर अधिकारी ने कहा कि कार्यकारी महमंत्री एवं महामंत्री ने जैसा बताया कि हमें अपने क्षेत्रों का ध्यान

रखना है तो वहाँ पर अधिवेशन भी रख सकते हैं। यदि क्षेत्रीय स्तर पर लोग फण्ड उपलब्ध करावें तो सागर में स्थायी तौर पर सम्मेलन किया जा सकता है।

(8) स्थल चयन अगली मीटिंग में करने का निर्णय लिया गया।

4. होली मिलन कार्यक्रम रमना फौरेस्ट (गढ़ाकोटा) में करने का प्रस्ताव श्री मनीष जैन गढ़ाकोटा ने दिया जिस पर विचार-विमर्श किया गया।

5. डॉ. सुरेन्द्र जैन प्राचार्य भगवां ने कहा कि प.पू. आर्थिका ज्ञानमंत्री माताजी ने कहा था कि यदि जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) में सम्मेलन या अधिवेशन रखें तो हम पूरी व्यवस्था देंगे।

6. इस पर श्री लुहारीजी ने कहा कि श्रवणबेलगोला में जो अधिवेशन हुआ था वह बहुत अच्छा हुआ था एवं वहाँ के भट्टारक श्री स्वस्ति चारुकीर्तिजी महाराज ने कहा था कि क्षेत्र पर गोलापूर्व महासभा का बड़ा सम्मेलन करना चाहिये। गोल्लाचार्य कीर्तिस्तम्भ बनाने के लिए भी उनसे चर्चा हुई थी। उसके बारे में अवगत कराते हुए इसके अनुमानित व्यय के बारे में बताया जिसमें 51 हजार रु. की राशि के लगभग 20 सदस्यों की आवश्यकता होगी जिस हेतु निर्मानित महानुभावों द्वारा घोषणा की गई :-

1. श्री सुरेन्द्र जैन प्राचार्य, भगवां 51000/-

2. श्री अमित चौधरी कमल चौधरी, सागर 51000/-

3. श्री सुरेन्द्रजी संतोषजी घड़ी, सागर 51000/-

4. श्री प्रदीपजी खाद सागर 51000/-

7. पं. श्री विनोदजी रजवांस ने कहा कि दक्षिण में श्रवणबेलगोला में सबसे ज्यादा शिलालेख हैं। गोल्लाचार्य के बारे में श्रवणबेलगोला में लिखे गए शिलालेख का उल्लेख करते हुए कहा कि गोल्ल देश की जगह जहाँ वर्तमान में हम सभी रह रहे हैं, वो पूरा क्षेत्र है। गोल्ल देश के राजा ने शश्रवण बेलगोला में जाकर दीक्षा ली और गोल्लाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

विगत परिचय सम्मेलन की समीक्षा :-

1. श्री प्रेमचंद सेठी बण्डा ने कहा कि परिचय सम्मेलन अच्छा रहा किंतु इस बार उपस्थिति कम रही। परिचय सम्मेलन क्षेत्रों पर ही होना चाहिये। बकस्वाहा रोड अब चालू हो गया है। नैनागिरि, गिरारजी किसी भी क्षेत्र में परिचय सम्मेलन रख सकते हैं।

2. श्री रविकांत सिंधर्द सागर ने कहा कि यह सही है कि परिचय सम्मेलन में उपस्थिति कम रही जिसका एक कारण मार्ग बंद रहना भी था। पत्रिका बाँटने में बहुत असुविधा हो रही है। रसीद पर अंकित किया जाए कि बिना रसीद के पत्रिका नहीं दी जाएगी। आगे चलकर दो-तीन साल बाद भोजन व्यवस्था बंद करनी पड़ेगी। पिछला सम्मेलन बहुत अच्छा था लेकिन उपस्थिति कम रही।

3. जैसे एक वक्ता ने कहा कि भोजन व्यवस्था आगे चलकर बंद करना पड़ेगी, इस पर श्री संतोष जैन, मनेन्द्रगढ़ ने सुझाव दिया कि भोजन व्यवस्था में कूपन रखा जाए, भले ही कम राशि हो।

4. श्री चक्रेश शास्त्री भोपाल ने कहा कि कुछ कमी-बेशी हर

- कार्यक्रम में होती है। जो कमियाँ सामने आती हैं उन्हें सुधारा जा सकता है। महिला इकाई के संदर्भ में कहा कि महिला अधिवेशन का समय बढ़ाना चाहिये। 1 घंटे में पूर्ण नहीं हो पाता है। महिला प्रकोष्ठ की प्रगति के बारे में बताया कि अधिवेशन के बाद जबलपुर में भी एक बैठक हो गई है जहाँ इकाई गठित होने की पूरी संभावना है। 24.1.2020 को बुद्धार में प्रकोष्ठ की बैठक में कोतमा की 40 महिलाओं ने महासभा की सदस्यता लेने की बात कही। साथ ही सागर इकाई के कार्यों की सराहना करते हुए सागर, दमोह, छिंदवाड़ा की इकाई द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी दी। बांसा में भी अधिवेशन के बाद महिला इकाई गठित होने की जानकारी से अवगत कराया गया।
5. बुंदेलखण्ड भवन संयोजक का जो प्रस्ताव अधिवेशन के दौरान प्राप्त हुआ था, उस पर लिये गये निर्णय की जानकारी कार्यकारी महामंत्री ने देते हुए कहा कि श्री कमल चौधरी को संरक्षक एवं श्री अनिल चौधरी को संयोजक बनाया गया है। साथ ही पिछले अधिवेशन के आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया जिसमें सभी घोषणाकर्ताओं की राशि आ जाने पर, लगभग 1,76,000 रु. का लाभ होना संभावित है।
6. श्री अमित चौधरी सागर ने कहा कि हमें अपनी सदस्य संख्या बढ़ाना होगी। जितनी ज्यादा सदस्य संख्या होगी, उतनी ज्यादा उपस्थिति रहेगी। सभी इकाइयाँ एक-दूसरे से जुड़ी रहती हैं। एक इकाई का कार्य होने पर सदस्य संख्या बढ़ने पर दूसरी इकाई को भी लाभ मिलता है। बुंदेलखण्ड भवन की प्रगति का विवरण प्रस्तुत करते हुए नए-नए लोगों को जोड़ने की आवश्यकता भी बताई।
7. अध्यक्ष महोदय द्वारा बुंदेलखण्ड भवन की प्रगति के संबंध में कहा कि चर्चा शिरोमणि आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज होली के समय तक श्री शिखरजी पहुँच रहे हैं। यदि मंदिरजी के प्रथम तल का कार्य हो जाता है तो अप्रैल माह में वेदी का शिलान्यास उनके सान्निध्य में करा सकते हैं।
8. श्रीमती निधि खाद, महिला इकाई अध्यक्ष सागर ने कहा कि भोजन की व्यवस्था चाहें तो बंद कर सकते हैं क्योंकि भोजन चालू होने पर लोग कार्यक्रम छोड़कर भोजन स्थल पर पहुँचने लगते हैं जिससे कार्यक्रम में उपस्थिति का भी अंतर आता है। और चाहें तो कूपन रख सकते हैं, भोजन सौजन्यकर्ता को फ्री कूपन दे सकते हैं। महिला अधिवेशन का समय बढ़ाने का भी उन्होंने सुझाव दिया।
9. श्रीमती आशा सेठ, महिला इकाई अध्यक्ष सागर ने भी महिला अधिवेशन का समय दूना करने का सुझाव दिया और कहा कि महिलाएँ जिम्मेदारी ले सकती हैं। उन्हें भी जिम्मेदारी सौंपी जाए।
10. श्रीमती संध्या जैन महिला इकाई अध्यक्ष, मकरोनिया ने भी महिला इकाई का समय बढ़ाकर तीन घंटे करने की बात कही।
9. नवीन कार्यकारिणी की घोषणा :
- महासभा के कार्यकारी महामंत्री श्री देवेन्द्र लुहरी ने महासभा की आगामी तीन वर्षों हेतु मनोनीत की गई नवीन कार्यकारिणी की घोषणा की जो अगले पृष्ठ पर प्रकाशित है।
10. शपथ ग्रहण समारोह :- बैठक में उपस्थित महासभा के उपरोक्त पदाधिकारियों एवं महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से शपथ पत्र भरकर वाचन कर शपथ ली गई।

सामूहिक शपथ के तौर पर नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण कर पंडित श्री विनोदजी रजवांस के निर्देशन में शपथ ली गई।

11. पंडित श्री विनोदजी रजवांस ने कहा कि गोलापूर्व इतिहास की 'स्मारिका' प्रकाशित होने जा रही है। इस कार्य को पूरा नहीं किया गया है। सभी समाज के इतिहास छप गए हैं। अपनी गोलापूर्व समाज का इतिहास नहीं छप पाया है। इस हेतु महासभा ने मीटिंग करके सभी को कार्य भी सौंपे थे लेकिन प्रगति नहीं हुई है। अतः अब उनके द्वारा इस कार्य को करने हेतु कहा गया है एवं स्मारिका में प्रकाशित किये जाने वाले बिंदुओं का विवरण भी बताया गया।
12. अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री संतोष जैन घड़ी ने कहा कि विचार-विमर्श के बाद यह लग रहा है कि परिचय सम्मेलन हमेशा अलग-अलग स्थानों पर होना चाहिये और यदि किसी कारणवश अन्य जगह तय नहीं हो पाती है तो उस वर्ष सागर में सम्मेलन करने हेतु तत्पर रहेंगे। उन्होंने कहा कि गिरारजी में क्षेत्रीय अधिवेशन रखा जाना चाहिये। भोजन व्यवस्था जैसी जारी है, वैसी ही आगे चलनी चाहिये। दान देने वालों की कमी नहीं है। हमारी ही त्रुटि हो सकती है। जैसे श्री चक्रेश जी शास्त्री महिला इकाई गठन के कार्य में आगे आए हैं, वैसे ही युवा प्रकोष्ठ के गठन के लिए लोगों को आगे आना चाहिये। जैसे ही नवीन पदाधिकारियों में से तीन महानुभाव इस कार्य के लिए आगे आएंगे, तो युवा प्रकोष्ठ का गठन प्रारंभ हो जाएगा। परिचय सम्मेलन, मिलन सम्मेलन ना होकर परिचय सम्मेलन बना रहे इस हेतु प्रत्याशियों के मंच पर आने की संख्या बढ़ाना होगी जिसे सभी पदाधिकारियों को करना चाहिये। महिला इकाई द्वारा कार्य की जिम्मेदारी चाही है तो उन्हें युवतियों को मंच तक लाने का कार्य करना चाहिये। महासभा के डीम प्रोजेक्ट श्री शिखरजी की प्रगति बताते हुए कहा कि बेसमेंट तैयार हो गया है। मार्च में मुहूर्त अच्छे नहीं हैं। अतः अप्रैल में वेदी शिलान्यास का मुहूर्त निकालने का लक्ष्य है। मार्च-अप्रैल 2020 में आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज भी शिखरजी में रहेंगे। बुंदेलखण्ड भवन हेतु दान एवं सदस्यता के लिए दो टीमें एक छत्तीसगढ़ एवं एक बुंदेलखण्ड के लिए निकालना है। समाज गौरव सम्मान की जगह 'गौरव सम्मान' लेख किया जाना है जो पिछले वर्ष से लेख किया जा रहा है।
- उन्होंने आगे कहा कि एक कड़ी बात बोल रहा हूँ कि जो पदाधिकारी महासभा की लगातार तीन मीटिंगों में नहीं आते हैं, जो सहयोग नहीं कर पा रहे हैं, उन्हें त्याग पत्र दे देना चाहिये या कड़ा निर्णय लेकर उनसे त्याग पत्र माँगा जा सकता है यदि सभी की सहमति हो तो। इस पर सभी ने करतल ध्वनि के साथ इस बात के लिए अपना समर्थन दिया।
- महिला प्रकोष्ठ के वर्तमान में तीन संयोजक हैं, उसमें अधिवेशन में आए प्रस्ताव अनुसार श्री मनोजजी बंगेला, सागर का नाम भी जोड़ने की उनकी द्वारा घोषणा की गई। उन्हें महिला प्रकोष्ठ गठन हेतु सदस्य पद पर बनाए जाने की सहमति व्यक्त की गई एवं निर्णय लिया गया।
13. बैठक के अंत में आभार प्रदर्शन एवं वर्णी चिकित्सा निधि में सहयोग की अपील महामंत्री श्री सुभाषजी चौधरी द्वारा की गई।
14. शाम के भोजन के साथ बैठक का समापन किया गया। ■

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा

निदेशक

डॉ. भागचंद जैन भागेन्द्रु -9425455388,

डॉ. प. शीतलचंद जैन-9414783707,

ब्र. जय निशांत जैन-9425141697,

श्री कपूरचंद घुवारा-9425880545,

श्री संतोषकुमार जैन घड़ी,

श्री ऋषभकुमार चंदेरिया-9907444539

प्रबंधकारिणी समिति

क्रं.	नाम	पद नाम	स्थान	मोबाइल क्रं.
1	श्री संतोषकुमार जैन 'घड़ी'	अध्यक्ष	सागर	9425092365
2	श्री सुभाष चौधरी 'गढ़ाकोटा वाले'	महामंत्री	सागर	9981015343
3	श्री सन्तोष कुमार जैन 'बैटरी वाले'	कोषाध्यक्ष	सागर	9425890921
4	श्री देवेन्द्रकुमार लुहारी	कार्यकारी महामंत्री	सागर	9425170865
5	श्री प्रेमचंद जैन (बमनौरा वाले)	आडीटर	सागर	9981955525
6	श्री विनोद कुमार जैन	उपाध्यक्ष	कोतमा	9325404333
7	श्री महेन्द्र कुमार चौधरी	उपाध्यक्ष	जबलपुर	9993913602
8	श्री महेन्द्र कुमार जैन बड़गांव	उपाध्यक्ष	टीकमगढ़	9425141579
9	श्री सुरेश कुमार मारौरा	उपाध्यक्ष	इन्दौर	6260964818
10	श्री बाबूलाल जैन (पनवारी वाले)	उपाध्यक्ष	घुवारा	9981316758
11	डॉ. शचीन्द्र मोदी	उपाध्यक्ष	तेंदूखेड़ा	9425469350
12	श्री चक्रेश कुमार शास्त्री	उपाध्यक्ष	भोपाल	9977885411
13	श्री प्रदीप कुमार जैन 'खाद'	उपाध्यक्ष	सागर	9425425228
14	श्री चौ. सुनील कुमार जैन	उपाध्यक्ष	जयपुर	9414783787
15	श्री शिवप्रसाद जैन	मंत्री	शाहगढ़	8827515957
16	श्री अरविन्दकुमार जैन	मंत्री	इन्दौर	9425350507
17	श्री दीपचंद जैन	मंत्री	दमोह	9685014655
18	डॉ. श्रीयांश जैन 'संग सेल्स'	मंत्री,	सागर	9827006337
19	श्री जिनेशकुमार जैन 'बहरोल'	मंत्री,	सागर	9993698875
20	श्री सुभाष कुमार सिंघई	मंत्री	कटनी	9993798036
21	श्री प्रेमचंद बरेठी	मंत्री	बंडा	9827801348
22	श्री डी. के. जैन	मंत्री	इन्दौर	9425054299
23	श्री अभय कुमार जैन	मंत्री	छिन्दवाड़ा	9827225091
24	श्री सुरेन्द्र कुमार खुर्देलीय	मंत्री	सागर	9893198459
25	श्री भागचंद जैन कार्यालय	मंत्री	सागर	9770435782
26	श्री सुबोध कुमार जैन (हीरापुर वाले)	कार्यालय मंत्री	सागर	9826092235
27	श्री चन्द्रभान जी जैन 'झूँझा'	संगठन मंत्री	टीकमगढ़	9425474236

28	श्री महेन्द्र कुमार जी जैन 'बहरोल'	संगठन मंत्री	सागर	9425452347
29	श्री सुदेश कुमार जैन	संगठन मंत्री	राजनांदगांव	9300081336
30	श्री मनीष कुमार जी जैन	संगठन मंत्री	गढ़कोटा	9300957075
31	श्री अनिल कुमार जी जैन	संगठन मंत्री	दुर्ग	9406240012
32	श्री राजेश कुमार जी जैन	संगठन मंत्री	भिलाई	9893760006
33	श्री प्रमोद कुमार जी जैन 'पाटन'	संगठन मंत्री	बड़ामलहरा	9425143908
34	श्री नरेन्द्र कुमार जी सेठ	संयुक्त मंत्री	इन्दौर	9926440457
35	श्री नरेन्द्र कुमार जी दिवाकर	संयुक्त मंत्री	कुरवाई	09893939377
36	श्री वीरेन्द्र कुमार जी निमानी	संयुक्त मंत्री	बकस्वाहा	9425453060
37	श्री पवन कुमार जी जैन	संयुक्त मंत्री	ग्वालियर	9425380621
38	श्री राजकुमार जी जैन	संयुक्त मंत्री	सतना	9827210210
39	श्री पारस जैन	संयुक्त मंत्री	दमोह	9826128079
40	श्री संतोष कुमार जी जैन	संयुक्त मंत्री	मनेन्द्रगढ़	9329533306
41	श्री देवेन्द्र जी जैन 'बाम्बे कटपीस'	संयुक्त मंत्री	खुरई	9754423216
42	श्री डॉ. यतीश जैन (तिली वाले)	संयुक्त मंत्री	जबलपुर	9424679131
43	श्री अवनीश कुमार जी संधी	प्रचार मंत्री	सागर	9425451444
44	सुरेन्द्र कुमार जैन प्राचार्य	प्रचार मंत्री	भगवां	9424672731

संयोजक समिति

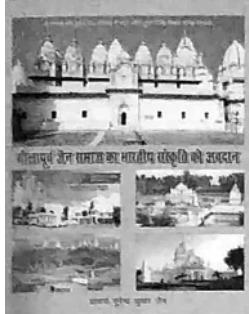
1	समाज गौरव सम्मान प्रकोष्ठ	पं. विनोद कुमार जैन, रजवांस-9406518971
2	वर्णी चिकित्सा निधि	श्री डॉ. के. जैन (पूर्व आयकर अधिकारी)-9425452203, श्री जिनेशकुमार जैन (बहरोल)
3	महिला प्रकोष्ठ निर्मात्री समिति	श्री चक्रेशकुमार शास्त्री-भोपाल, श्री विनोद कुमार जैन-कोतमा, श्री सुरेश जैन (मारौरा) इन्दौर
4	चेतना सम्मान	श्री विनोदकुमार जैन-कोतमा, प्राचार्य डॉ. अरविन्दकुमार जैन, सागर-9406532221
5	कैरियर का काउन्सिलिंग	प्राचार्य डॉ. अरविन्दकुमार जैन, प्राचार्य डॉ. अशोककुमार जैन-9826629294
6	सम्पादक मंडल-गोलापूर्व जैन	श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर' (प्रधान संपादक), सनावद-9407492577, डॉ. रंजना पटोरिया (सह संपादक), कटनी-930065009, श्री सुरेन्द्र खुर्देलीय (प्रबंध संपादक), सागर
7	सदस्यता अभियान समिति	श्री महेन्द्र कुमार जैन (बड़ागांव), श्री चन्द्रभान ढूड़ा, श्री प्रेमचंद बरेठी-बंडा, श्री मनोज बंगेला-सागर,
8	सामाजिक समस्याज्ञसमाधान प्रकोष्ठ	श्री सुरेश कुमार जैन (मारौरा)-इन्दौर
9	जन कल्याणकारी प्रकोष्ठ	श्री विनोद कुमार जैन, कोतमा

बुन्देलखण्ड भवन, मधुबन गिरिडीह

श्री अमितकुमार चौधरी (संयोजक)-9877080080,	श्री कमल चौधरी-9425171647,
श्री पी.सी.जैन (नेहानगर) 9300667620,	श्री प्रेमचंद बरेठी-बंडा,
श्री मनोजकुमार बंगेला, सागर-9425171294,	श्री सन्मति जैन, सागर-9425462997,
श्री अभयकुमार जैन (छिंदवाड़ा),	श्री देवेन्द्रकुमार जैन (कुड़ीला) मधुबन-9430702400,
एड. श्रेणिक जैन-9827754942	



एक संग्रहणीय दस्तावेज़ गोलापूर्व जैन समाज का भारतीय संस्कृति को अवदान



सम्पादक
प्राचार्य सुरेन्द्र कुमार जैन भंगवा
संस्करण
प्रथम (2019)
मूल्य
प्रकाशन समिति में वितरण हेतु
प्रकाशक
डॉ. महेन्द्र कुमार जैन अध्ययन एवं शोध
केन्द्र, भंगवा, जिला छतरपुर (म.प्र.)

भगवान जिनेन्द्र देव के वचनों पर आस्था रखने वाले एवं तदनुरूप

आचरण करने वाले जैन कहलाते हैं। मध्यकालीन साहित्य के उल्लेखों के आधार पर 84 जैन जातियों का अस्तित्व मिलता है। इनके नामों में भिन्नता है एवं वर्तमान में सभी 84 जातियाँ उपलब्ध भी नहीं है, तथापि जो भी उपलब्ध है उनमें से एक प्रमुख जाति गोलापूर्व है। मूलतः बुंदेलखण्ड क्षेत्र में निवास करने वाली गोलापूर्व दिगंबर जैन जाति के सदस्य पूरे देश में फैल गए हैं। इस जाति के गैरव को बढ़ाने वाले संतों, विद्वानों एवं समाजसेवियों की सूची बहुत लंबी है। इनके द्वारा निर्मित मंदिरों, धर्मशालाओं, प्रतिष्ठित मूर्तियों की विशाल संख्या इस जाति के सांस्कृतिक अवदान को दर्शाती है।

जैन समाज अपने इतिहास को संरक्षित करने एवं अपने श्रावकों द्वारा दिये गये अवदान को संकलित करने में बहुत उदासीन रहा है। अब विभिन्न जातियों ने जैसे खंडेलवाल, अग्रवाल, हूमड़, पल्लीवाल, परवार एवं गोलापूर्व समाज के अवदानों को संकलित करने का कालान्तर में जैन समाज के अवदान को संकलित करने में मदद मिलेगी। विद्यान्वेषी, समाज गैरव डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी जैन के इस श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय प्रयास से न केवल डॉक्टर साहब का अपितु सम्पूर्ण गोलापूर्व समाज का गैरव बढ़ा है। कृति गोलापूर्व समाज के हर घर में एवं प्रत्येक जिन मंदिर, पुस्तकालय में रखी जानी चाहिये। यह इतिहास का ग्रंथ है एवं जैन समाज के विस्मृत होते इतिहास को संरक्षित करना तत्काल अपरिहार्य रूप से आवश्यक है। ● डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संग्रहीत शेष

- श्री सुभाषचंद्रजी जैन, डॉगरांव
- श्री नेमीचंद्रजी शाह (रजवांस वाले), सागर
- श्रीमती चन्द्रानी जैन, ध.प. स्व. श्री कोमलचंद्रजी जैन, गढ़कोटा
- श्री शाह गुलाबचंद्रजी जैन मडदेवरा
- श्री प्रेमचंद्रजी जैन (पड़वार वाले), सागर
- श्री जिनेश कुमार मलैया, सागर
- श्री संतोष कुमार जी जैन (कोट वाले), सागर
- श्री विजय कुमार चंद्रेश्या, सागर
- सुश्री प्रियंका जैन बंगेला (नानू), सागर
- श्री सि. प्रकाशचंद्र जैन, पटेरा, जिला दमोह
- श्री हरिशचंद्रजी जैन (चक्की वाले), गढ़कोटा
- श्रीमती शांतिबाई जैन, ध.प. श्री कपूरचंद्रजी जैन (झागर वाले), गोसलापुर
- श्रीमती रश्मि सेठ (प्रीति) शिक्षिका, ध.प. श्री कमलेश सेठ, शाहगढ़
- सेठ गणेशप्रसादजी जैन, बड़गांव धसान
- श्री दिनेश कुमार जैन सुपुत्र श्री बाबूलालजी जैन (पनवारी वाले), घुवारा
- श्री अजित कुमार जैन, छिंदवाड़ा

सहयोग राशि प्राप्त

- चि. कुलदीप जैन की सगाई में श्री सुरेन्द्रचंद्र जैन की ओर से सहयोग राशि 1500 रुपये प्राप्त हुए।
- डॉ. जूही जैन के परिणय पर चौ. सुनील कुमार जैन (गढ़कोटा वाले) जयपुर की ओर से सहयोग राशि 3000 रु. प्राप्त हुए।
- स्व. श्री नेमीचंद्रजी शाह की स्मृति में श्री शैलेन्द्र शाह, नीलेश शाह, सागर की ओर से सहयोग राशि 1100 रु. प्राप्त हुए।
- स्व. श्री अजित कुमार जैन की स्मृति में रंगमहल परिवार, छिंदवाड़ा की ओर से सहयोग राशि 2100 रु. प्राप्त हुए।
- चि. सजग जैन के परिणय पर श्री जयकुमार जैन बैणी वालों, सागर की ओर से सहयोग राशि 5100 रु. प्राप्त हुए।
- सौ. मोनिका जैन के परिणय पर श्री अजित कुमार चंद्रेश्या की ओर से सहयोग राशि 2100 रु. प्राप्त हुए।
- सौ. प्रिया जैन के परिणय पर श्री प्रकाशचंद्र जैन सुनवाहा वालों की ओर से सहयोग राशि 1100 रु. प्राप्त हुए।
- चि. समकित जैन के परिणय पर श्री सुनील कुमार जैन एमपीईबी सागर की ओर से सहयोग राशि 1100 रु. प्राप्त हुए।

साहित्य जगत की महान विभूति पं. पन्नालालजी

» डॉ. श्रीमती आशा जैन

साहित्याचार्य डॉ. पंडित पन्नालालजी वर्तमान युग के विद्वान हैं। उनकी शिक्षा श्री सतर्क सुधा तरंगिणी जैन पाठशाला जिनका वर्तमान रूप श्री गणेश प्रसाद वर्णी संस्कृत महाविद्यालय सागर है, में हुई। पंडितजी के आध्य प्रेरणा स्रोत आध्यात्मिक संत युग पुरुष पूज्य गणेशप्रसाद वर्णीजी के सदाशय व सत्यपरिश्रम से संस्थापित यह विद्यालय अनेकानेक जैन विद्वान समाज को दे चुका है जिनमें पं. पन्नालालजी नाम सदैव अग्रणी रहा है। पंडितजी अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन विद्वत् परिषद के अनेक वर्षों तक मंत्री व अध्यक्ष थे। वे अनेक विषयों के विद्वान रहे। व्याकरण, साहित्य, धर्म सिद्धांत, न्याय दर्शन उनके प्रमुख विषय थे। साथ ही वे एक अच्छे लेखक, अनुवादक व संपादक भी थे। हिन्दी और संस्कृत भाषा के श्रेष्ठ कवि भी थे।

पंडित पन्नालालजी साहित्य के प्रतिष्ठित आचार्य, शास्त्र मर्मज्ञ, सफल अध्यापक एवं टीकाकार, सुवक्ता, कर्मठ साहित्य सेवी एवं समाज की विभूति थे। भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित संस्कृत के प्रायः सभी आर्ष पुराण ग्रंथों तथा महा चिंतामणि धर्मशर्माभ्युदय प्रभूति पौराणिक काव्यों के संपादन एवं भाषानुवाद का श्रेय उन्हें ही जाता है। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा धन्य कुमार चरित्र, सम्यकृत्य कौमुदी एवं कई कथा ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। कुन्दकुन्द भारती, समयसार, लघुतत्वस्फोट, तत्वार्थ सूत्र, रत्न, श्रावकाचार, सामायिक पाठ आदि के सरल सुबोध अनुवाद और श्रुत सप्ताह नवनीत आदि कई स्वतंत्र रचनाएँ हैं। उनके शोध प्रबंध- महाकवि हरिशचंद्र एक अनुशीलन पर उन्हें सन् 1973 में डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर ने पीएचडी की उपाधि प्रदान की।

पंडितजी ने स्व. डॉ. नेमीचंद शास्त्री की विशाल कृति एवं तीर्थकर कृति तीर्थकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा के प्रकाशन एवं प्रसार के लिए अत्यंत सहयोग दिया था। डॉ. पं. पन्नालाल साहित्याचार्य ने अखिल भारतवर्षीय जैन विद्वत् परिषद के मंत्री के पद पर सफलतम 30 वर्ष से अधिक समय तक रहकर विद्वानों को स्वकर्तव्य के प्रति जागरूक रखा। वे विद्वत् परिषद के कर्मठ मंत्री रहे। समस्त जैन समाज एवं विद्वतगणों ने पंडितजी के इस निःस्वार्थ सेवा से कभी विमुख नहीं होने दिया। इस उपलब्धि पर सन् 1973 में अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन विद्वत् परिषद ने अपने शिवपुरी अधिवेशन में उनकी अमूल्य सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें रजतपट पर प्रशस्ति देकर सम्मानित किया था।

जैसा कि विदित है कि विद्वान समाज के लिए अपनी आखिरी साँस तक देता ही रहता है। परंतु वह समाज से कुछ लेता नहीं। समाज विद्वानों का मूल्यांकन तो कर नहीं पाती फिर भी समाज अभिनंदनों के माध्यम से



अपना कर्तव्य निर्वाह करती है। पं. पन्नालालजी के प्रति समाज द्वारा कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अनेक समान समारोह आयोजित किये गये थे। उनके सम्मानों का लेखा-जोखा करना कठिन कार्य है। फिर भी कुछ सम्मानों का यहाँ विवरण करेंगे।

पंडितजी के महत्वपूर्ण सम्मान उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर आदर्श संस्कृत शिक्षक के रूप में प्रभावी वक्ता के रूप में ग्रंथों के संपादक के रूप में अनेक बार आयोजित किये गये। विद्वत्ता एवं प्रभासक वक्ता के रूप में 1965 में अप्रैल 1965 में दिगंबर जैन समाज ने सम्मान किया। प्रत्येक पर्वराज पर्युषण पर्व पर पंडितजी प्रवचनों के लिए स्थान-स्थान पर समाज द्वारा माँग की जाती थी। उनकी वाणी से जनता अत्यंत भाव विभोर हो जाती थी तथा उनका सम्मान करके गौरवान्वित होती थी।

आदर्श संस्कृत शिक्षक के रूप में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा विज्ञान भवन दिल्ली में विशाल जनसमुदाय के बीच उन्हें सम्मान दिया गया। यह जैन समाज के लिए उस समय अत्यंत गौरव की बात थी। पंडितजी का राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगठनों द्वारा सम्मान किया गया। माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश भोपाल में सन् 1970 जनवरी एवं 26 जनवरी 1971 में संभागीय शिक्षक समारोह सम्मान समिति के तत्वावधान में जबलपुर संभाग में भी पंडितजी का सम्मान किया गया। राष्ट्रीय पुरस्कार के संदर्भ में अनेक जैन संगठनों जैसे जैन समाज जयपुर, सागर, जबलपुर आदि ने भी सम्मान किया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत् परिषद ने राजस्थान में पंडितजी द्वारा संपादित कृति गद्य चिन्तामणि को पुरस्कृत किया और इस पर भी श्री गणेश वर्णी पुरस्कार दिया गया।

वीर निर्वाण ग्रंथ प्रकाशन समिति इंदौर ने भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर पंडितजी द्वारा संपादित कृति पुरुदेव चम्पू साहित्य को सम्मानित करके उनका साहित्य सम्मान किया। उन्हें सागर नगर में विद्या वारिधि की उपाधि से विभूषित किया गया था। सिद्धक्षेत्र आहारजी व द्रोणगिरि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय प्रतिष्ठा महोत्सव

समितियों ने अनेक बार सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त जैन समाज समनाबाद, जैन समाज विदिशा, दिल्ली, गढ़ाकोटा, कलकता, बंबई, इंदौर, हस्तिनापुर, दमोह, बंडा, मुंगावली आदि स्थान पर संपन्न विभिन्न महत्वपूर्ण आयोजनों के अवसर पर पंडितजी का सम्मान किया गया।

सन् 1981 में दिंगंबर जैन अतिथिय क्षेत्र खजुराहो में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव पर विद्वत परिषद के अधिवेशन अवसर पर पंडितजी का सम्मान विशाल जनसमूह के बीच महोत्सव समिति की ओर से किया गया। यह विशेष सम्मान पूज्य 108 विद्यासागरजी महाराज, स्वस्ति श्री पंडिताचार्य भट्टारक चारुकीर्तिजी महाराज, मूढबद्री एवं विशाल विद्वत समूह, जनसमूह के बीच किया गया जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण सम्मान था। सन् 1982 में बंबई में भारतीय ज्ञानपीठ स्वशांति सागर जैन ट्रस्ट द्वारा आयोजित जैन विद्वत गोष्ठी में पंडितजी का सम्मान किया गया। पूज्य श्री आचार्य विद्यासागरजी के सान्निध्य में षट्खंडागम जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की वाचना में पंडितजी का विशेष योगदान था। इस अवसर पर भी उनका सम्मान किया गया था।

श्री जैन विद्या शोध संस्थान श्री महावीरजी द्वारा पंडितजी एक मौलिक कृति को सम्यक्त्व चिन्तामणि को महावीर पुरस्कार के लिए चुना गया जिसके फलस्वरूप पंडितजी को उस समय 5 हजार रु. की राशि से सम्मानित किया गया था। इस प्रकार अनेक आयोजनों में पंडितजी को सम्मान मिलना समाज के लिए सौभाग्य की बात थी। यह उनकी विद्वत्ता का परिचय था।

यद्यपि पंडितजी आज हमारे बीच नहीं हैं किंतु शिक्षा जगत में उनका आदर आज भी है। उन्होंने वर्णी दिंगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय की सेवा करके गुरुकुल पिसनहारी मढ़िया को बहुविध सेवा करके उसे प्रगति के पथ पर पहुँचाया। पंडितजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि स्त्री शिक्षा के बे प्रबल समर्थक थे। पूज्य वर्णीजी की भावना को मूर्त रूप देने के लिए सागर में सिंगइरे रेवारामजी ट्रस्ट द्वारा दिंगंबर जैन महिला आश्रम की स्थापना करवाई एवं इस संस्था में जैन विधवा, निराश्रित महिलाओं को पंडितजी के कुशल निर्देश में धर्म शिक्षण व लौकिक शिक्षण दिया जाता था। अनेक विदुषी महिलाएँ अपनी शिक्षा समाप्ति के पश्चात शासकीय, अशासकीय संस्थाओं में अध्यापन आदि कार्य कर ससम्मान जीवन यापन करती। अनेक उदासीन महिलाओं का उद्धार हुआ। ऐसी अनूठी महिलाओं में आर्थिक विशुद्धमती, आर्थिक विनयमती, आर्थिक कनकमतीजी के अतिरिक्त अनेक आर्थिका के उल्लेख मिलते हैं।

इस प्रकार पंडितजी ने अध्यापन, संपादन के साथ-साथ अनेक साहित्यिक संगोष्ठियों एवं सर्वधर्म सम्मेलनों में भी भाग लेकर जैन समाज का सच्चा प्रतिनिधित्व किया। आकाशवाणी केन्द्रों से भी अनेक वार्तालाप प्रसारित किये गये। वे न केवल शास्त्र मर्मज्ञ थे, अपितु पूजा, प्रतिष्ठा के भी प्रकांड ज्ञाता व विद्वान थे।

वर्तमान समय में भी नई पीढ़ी के मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा है। देखने में आता है कि उनके आदर्शों का आदर सभी हृदय से करते हैं। नई पीढ़ी के लिए वे अथक प्रेरणा हैं। पंडितजी की जो जीवन चर्चा थी वह हमें बहुत कुछ सिखाती है। ऐसे मानवता के कीर्तिमान पंडितजी के प्रति मेरा शत-शत नमन...। ■

इंटरनेट पर बढ़ता समय पर्यावरण के लिए खतरा

एक टीवी शो देखने से 138 किमी कार चलाने के बराबर प्रदूषण



इंटरनेट भी प्रदूषण का सबसे बड़ा जरिया बन गया है। इसे ऐसे भी समझा

जा सकता है कि नेटफिलक्स पर अपने पसंदीदा टीवी शो के सीजन को स्ट्रीम करने पर 138 किमी. कार चलाने के बराबर प्रदूषण होता है। इंटरनेट के बढ़ते चलन के कारण इस तरह का प्रदूषण आम हो गया है। ज्यादातर लोग जब मोबाइल पर ये सर्च करते रहते हैं कि पर्यावरण बचाने के लिए क्या-क्या उपाय किये जा रहे हैं, इस दौरान भी वे प्रदूषण फैलाते रहते हैं। इससे ओजोन परत को भी काफी नुकसान हो रहा है। इसके कारण पराबैंगनी किरण से हमें काफी नुकसान हो सकता है। एक डॉक्यूमेंट्री के अनुसार इंटरनेट पर हमारा बढ़ता समय पर्यावरण को विनाश की ओर ले जा रहा है। शोधकर्ताओं के अनुसार जब हम इंटरनेट पर टीवी, फिल्में आदि देखते हैं तो फोन और कम्प्यूटर पर विशाल डेटा सेवा केन्द्रों से भूमिगत केबल के माध्यम से भेजा जाता है जो हमसे हजारों मील दूर होता है। इस दौरान काफी ऊर्जा की खपत होती है।

ऑकड़ों के अनुसार दुनिया के 7.7 अरब लोगों में से आधे से अधिक लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। इस कारण सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र लगभग 4 प्रतिशत वैश्विक ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन करता है जो नागरिक उड्डयन आयोग से लगभग दो गुना है। इंटरनेट ट्रैफिक 2015 और 2019 के बीच तीन गुना हो गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि 2022 तक यह एक बार फिर दोगुना हो सकता है। यही नहीं, दुनिया की सबसे बड़ी टेलीविजन स्ट्रीमिंग सेवा नेटफिलक्स की सदस्यता पिछले साल 20 प्रतिशत बढ़कर 16.7 करोड़ हो गई।

ब्रिटेन में बस एक ईमेल भेजें, घटेगा कार्बन

प्रो. माइक बर्नस ली (सर टिम के भाई, जिन्होंने वर्ल्ड वाइड वेब का आविष्कार किया था) ने एक अध्ययन में पाया कि यदि ब्रिटेन में हर कोई एक दिन में केवल एक ही ई-मेल भेजता है तो 16433 टन से अधिक कार्बन हर साल बचाया जा सकता। ■

निर्मलता के साथ चले गए ‘निर्मलजी’



जी वन में बहुत कम परिवार ऐसे होंगे जिनके परिवारजन सपरिवार प्रतिभा सम्पन्न होकर सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पित हों। 21 अप्रैल 1932 को कटनी जिले के छोटे से ग्राम रीठी में जन्मे नीरजी व निर्मलजी, सुमित्राजी अब हमारे बीच नहीं रहे। नीरजी व सुमित्राजी तो बहुत पहले स्वर्गवासी हो गए। उनके अनुज जो अपने नाम के अनुरूप अपना जीवन जी रहे थे, विगत 4 जून 2020 को अत्यंत शांत परिणामों के साथ हमसे विदा

हो गए।

एक साहित्यकार, कुशल वक्ता, सशक्त मंच संचालक, समर्पित लेखक, दया-करुणा के भंडार श्री निर्मलजी सतना नगर के एक वरिष्ठ समाजसेवी व स्वनामधन्य व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपनी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व ही अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग किया था। वे कोरोना संकट के लिए पाँच लाख रुपये का चेक सतना कलेक्टर को देकर आए थे।

प्रख्यात साहित्यकार पुरातत्वविद स्व. श्री नीरजी जैन (सतना) के अनुज व जैन जगत की परम विदुषी आर्थिका रत्न विश्वद्वमती माताजी के गृहस्थाश्रम के भाई होने का सौभाग्य उन्हें मिला। जो सबके भाग्य में नहीं होता है। अपनी इस पहचान के साथ उन्होंने स्वयं अपने आपकी एक अलग पहचान भी स्थापित की जिसे हम सब जानते हैं।

दिगंबर जैन जगत का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन प्रति 12 वर्ष में श्रवणबेलगोला में आयोजित होता है, उस आयोजन की संयोजना में आपने अनेक कार्य किये। बताया जाता है कि शाकाहार के प्रति चेतना जगाने के प्रति वे बड़े सजग थे। शाकाहार प्रदर्शनी, संगोष्ठी, सेमिनार अपने तर्क पूर्ण प्रेरणादायी उद्बोधनों से आपने अनेक जनों को शाकाहारी बनाने का उपक्रम किया। अनेक जैनाचार्यों का आशीर्वाद उनको हमेशा मिलता रहा।

मात्र चौथी कक्षा तक पढ़े निर्मलजी ने अपने स्वरूप ज्ञान से अपने आपको ऐसा चमकाया कि वे देशभर में प्रवचन के लिए बुलाए गए। वहीं विदेशों में भी उन्हें आतिथ्य प्रदान कर उनके अनुभवगम्य ज्ञान को नमन किया। धार्मिक जीवन में एक सद्गृहस्थ की जिम्मेदारी पूर्ण करते हुए आपने 1991 में पूज्य मुनिश्री क्षमासागरजी से ब्रह्मचर्य व्रत लिया था। उनके पुत्र श्री सुधीर जी जैन व सतीश जी जैन समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी हैं। व दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के माध्यम से सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। अत्यंत निर्मल परिणामी समाज गैरव श्री निर्मलजी जैन सतना के निधन पर अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन गोलापूर्व महासभा विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करती है। ■

-राजेन्द्र जैन ‘महावीर’



जैन समाज सतना के वरिष्ठ विद्वान् एवं सुधीर जैन, सतीश जैन के पिताश्री 89 वर्षीय पंडित निर्मल जैन जी ने कोरोना संकट आपदा से निपटने हेतु पाँच लाख रुपये की सहायता राशि का चेक सतना कलेक्टर श्री अजय कटेसरिया को भेंट किया



कथा

जली रोटी



» डॉ. आशीष जैन आचार्य

संस्कार यूथ फाउंडेशन, शाहगढ़

“माँ...! कितना समय लगाती हो भोजन में...” रोहित ने कहा। माँ ने जल्दी-जल्दी भोजन बनाकर बेटे को परोसा।

“माँ...! तुम भी... कितनी बार कहा ये सब्जी मत बनाया करो। और रोटी... ये भी जली सी... क्या माँ?”

अभी रोहित सिर्फ 15 वर्ष का था। दसवीं कक्षा में पढ़ रहा था। माँ ने कहा- “बेटा रोहित! भोजन अमूल्य है, ये सबको पता है। लेकिन भोजन में क्या-क्या और कैसे कब खिलाना है, ये सिर्फ माँ को पता होता है।”

“माँ, ये ज्ञान की बातें रहने दो। मैं अगले साल आईआईटी की तैयारी के लिए कोटा जाऊँगा। वहाँ पर बहुत अच्छे होस्टल हैं। घर से भी अच्छा भोजन मिलता है। वहाँ।”

माँ ने कहा- “ये तो अच्छी बात है। मैं भी यही चाहूँगी कि तुम्हें घर से अच्छा भोजन मिले।”

सच ही तो है। भोजन तो कहीं भी मिल जाता है- अच्छा और बहुत अच्छा। पर माँ के हाथ का बना भोजन सब जगह काँ मिलता?

“रोहित, स्कूल को देर हो रही है, जल्दी चलो।” उसके दोस्त रमेश ने कहा।

“रमेश! चल जल्दी से चलते हैं।”

“रोहित! तू माँ पर इतना क्यों बौखला रहा था?”

“क्या बताऊँ यार! रोज-रोज माँ वही सब्जी रोटी..., खैर छोड़ो। तुम बताओ, तुम भोजन करके तो आए हो या आज भी ऐसे ही आए हो?”

“हाँ यार रोहित! पापाजी की तबीयत ठीक नहीं है। तो मैं उनकी देखभाल करता रहा। इतने में काफी समय निकल गया।”

“तो क्या आज भोजन नहीं बना?” रोहित ने आश्चर्य से पूछा।

“बनाया तो है, पर सिर्फ खिचड़ी, वो भी पापा के लिए।” रमेश ने कहा।

“तुमने अपने लिए क्यों नहीं बनाई?”

“क्या करूँ यार? आज स्कूल में अपना प्रैक्टिकल है और फिर लेट भी हो रहा था। छोटे भाई के लिए कल शाम का कुछ भोजन रखा, वो स्कूल से आकर खा लेगा।”

“छोड़ो यार रोहित! ये तो रोज की बात है।”

सच में, जब से रमेश की माँ का निधन हुआ है, तब से रमेश छोटी सी उम्र में ही बहुत बड़ा हो गया।

“यार रोहित! तुम बड़े भाग्यशाली हो जो तुम्हें रोज माँ के हाथ का भोजन मिलता है।”



“क्या यार रमेश! फालतू की बात लेकर बैठ गए।” रमेश मन ही मन माँ को याद करता और दुआ करता कभी किसी की माँ उससे न बिछड़े।

दिन गुजरते गए, परीक्षा हुई, परिणाम आया और रोहित अभी से कोटा

आईआईटी की तैयारी के लिए चला गया। रोहित को वहाँ बहुत अच्छा लगा। नए-नए दोस्त, नया माहौल, और भोजन में भी फास्ट फूड, जंक फूड, पतासी, डोसा और न जाने बहुत सारी चीजें खाने को मिलती। उसके पिता ने उसको एक समृद्ध और महंगे होस्टल में एडमिशन दिलाया था।

उसने मेहनत की और वह सफल हुआ। आईआईटी खड़गपुर पहुँच गया। वहाँ भी होस्टल में रहता। कभी रोटी मन की न मिली तो लगा माँ ठीक बनाती थी। पर ऐसा कभी-कभी लगता उसे। वहाँ से निकलकर वह एक सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी करने

लगा। वहाँ भी एक होस्टल में रहा। अब रोहित को वहाँ का खाना खटकने लगा। अब लगता माँ बहुत अच्छा खाना बनाती थी। माँ के हाथ का भोजन सिर्फ पेट नहीं भरता था अपितु शरीर को भी पौष्टिक बनाता था। वे ध्यान रखती थी कब क्या खिलाना है? आज मैंने बहुत कुछ पा लिया है लेकिन पौष्टिक भोजन की जो पूर्ति माँ से होती थी, वो अब कहाँ?

एक बार तो थोड़ी सी जली रोटी होने पर मैंने थाली फेंक दी थी और माँ ने थाली से जली वाली रोटी निकालकर मेरे मन मुताबिक रोटी बनाकर दी थी। जब मैं बहुत बीमार था, तब उन्होंने मुझे उबली सब्जियाँ, दलिया और खिचड़ी दी। उस समय मैंने उनका कितना अपमान किया? भला-बुरा कहा। पर माँ फिर भी मेरे लिए पौष्टिक भोजन देती। कभी-कभी खीर-पुड़ी भी बनाई तो मैंने कह दिया- “माँ! आपसे बनती नहीं खीर। पिछले सप्ताह जो जैन साहब के यहाँ निमंत्रण में गए थे, उसमें खीर बहुत अच्छी बनी थी। आप कुछ सीखो उनसे।” एक दिन तो जब मैं स्कूल से आया तो माँ भोजन कर रही थी। मैंने आव देखा न ताव, माँ से कहा- “माँ! मुझे तो फ्राय चावल खाना है। आप तुरंत बनाओ।” माँ ने मुझे खूबा जानकर तुरंत खाली पर से उठकर मेरे लिए फ्राय चावल बनाए। मुझे खिलाए फिर उन्होंने अपना भोजन पूरा किया। न जाने कितना कुछ मेरे स्वस्थ शरीर के लिए उन्होंने अपने शरीर को दुःख दिया। जब भी मैं होस्टल में होता, माँ एक ही बात पूछती- भोजन ठीक से करना, समय से करना और मैं उसकी बात सुनता भी नहीं था। आज उनके हाथ के बनाए भोजन के स्वाद को अनुभव कर रहा हूँ। ऐसा भोजन का स्वाद तो देवताओं के भोजन में नहीं होता होगा। “माँ! आपका भोजन सिर्फ पेट नहीं भरता था, मेरा जीवन भरता था।”

सच ही कहा था मेरे दोस्त रमेश ने “रोहित! तुम बहुत भाग्यशाली हो जो माँ के हाथ का भोजन मिलता है।” तब मैं समझ नहीं पाया और आज समझ गया हूँ तो... मेरी माँ... मेरी माँ... आपके हाथ का बना वह भोजन... बस स्मृतियों में ही शेष रहा है। माँ! अब तुम नहीं हो, पर तुम्हारे हाथ का बना भोजन आज भी मेरे जीवन को जीवन रखे हैं। धन्य है माँ आप! होती हो तो भी हमारा ध्यान रखती हो और नहीं होती हो तब भी हमें ध्यान रखने योग्य बना देती हो। ■

पूज्य वर्णीजी पर जारी भारतीय डाक विभाग के दो विशेष आवरण



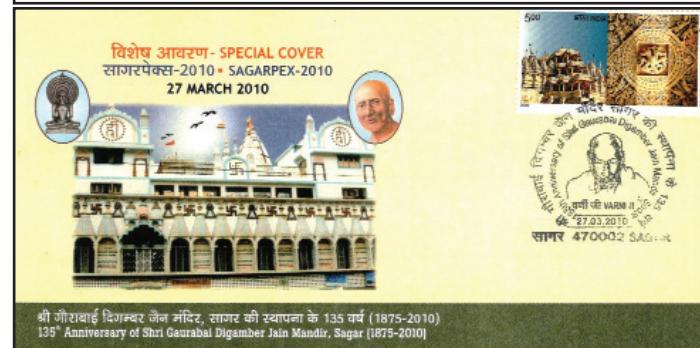
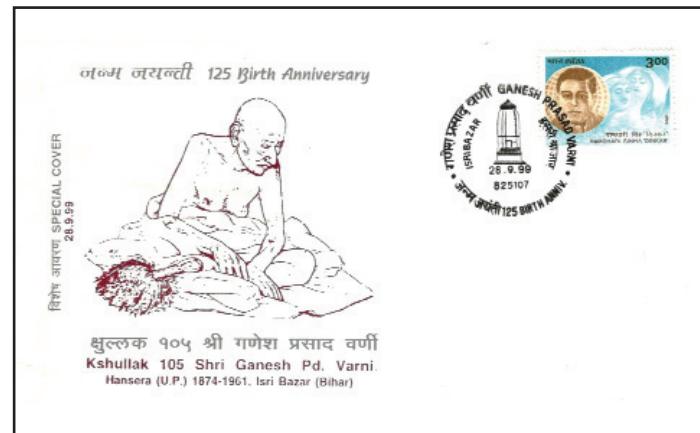
» सुधीर जैन

सुषमा प्रेस, सतना (म.प्र.)
मो. 9425174190

जन-जन के पूज्यनीय आध्यात्मिक जैन संत, शिक्षाविद, समाज सुधारक पूज्य 105 श्री गणेश प्रसादजी वर्णी बुंदेलखंड के प्रसिद्ध जैन संत थे। वैष्णव कुल में उत्पन्न होने के बावजूद अपनी उल्कष साधना और जैन धर्म पर अटूट श्रद्धा के कारण वे जैन जगत के प्रभावक धर्मगुरु बन गए थे। वर्णीजी का जन्म अश्विन कृष्ण चतुर्थी विक्रम संवत् 1931 को ललितपुर जिले के हसेरा गाँव में हुआ था। पच पुराण के प्रवचन सुनकर 10 वर्ष की उम्र में ही उनका रूद्धान जैन धर्म की ओर हो गया था। धर्म परायण श्रीमती चिरोंजाबाई के सात्रिध्य में वर्णीजी ने जैन धर्म ग्रहण किया और जैन धर्म के सिद्धांतों का परी तरह पालन एवं प्रचार-प्रसार किया।

वर्णीजी ने बुंदेलखण्ड के गाँव-गाँव में विद्यालयों, गुरुकुल और आश्रमों आदि की स्थापना की जिससे सैकड़ों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन को धन्य बनाने की ओर अग्रसर हुए। भाद्र कृष्णा एकादशी विक्रम संवत् 2018 को उन्होंने सल्लेखना पूर्वक दिगंबर मुनि के रूप में समाधि मरण स्वीकार किया। समाधि के समय उनका नाम पूज्य मुनि 108 श्री गणेश कीर्तिजी रखा गया था। बिहार के पिरीडीह जिले के ईसरी में स्थित पारसनाथ दिगंबर जैन शांति निकेतन उदासीन आश्रम में उनकी समाधि हुई और इसी आश्रम के प्रांगण में एक भव्य स्मारक का निर्माण उनकी स्मृति में किया गया।

यह प्रसन्नता और गौरव की बात है कि पूज्य गणेश प्रसाद वर्णीजी के स्मृति में भारतीय डाक विभाग द्वारा विभिन्न अवसरों पर दो विशेष आवरण जारी किये गये हैं जिन पर डाक विभाग द्वारा विशेष मोहर भी लगाई गई है। पहला विशेष आवरण पूज्य वर्णीजी की 150वीं जन्म जयंती के अवसर पर 28 सितंबर 1999 को ईसरी बाजार (बिहार) में जारी किया गया था। इस विशेष आवरण पर वर्णीजी के लोकप्रिय चित्र का लाइन स्केच उनकी पीछी



के साथ अंकित है जबकि इस कवर पर भारतीय डाक विभाग द्वारा लगाई गई विशेष मोहर पर ईसरी में स्थित पूज्य वर्णाजी की स्मृति में निर्मित भव्य सारक का चित्र प्रदर्शित है।

दूसरा विशेष आवरण सागर (मध्यप्रदेश) में 27 मार्च 2010 को जारी किया गया था। श्री गौरबाई दिगंबर जैन मंदिर सागर की स्थापना के 135 वर्ष पूर्ण होने पर 27 मार्च 2010 को सागर में आयोजित एक भव्य समारोह में भारतीय डाक विभाग के सौजन्य से एक विशेष आवरण जारी किया गया था। इस विशेष आवरण पर भारतीय डाक विभाग ने जो विशेष मोहर लगाई थी उसमें पूज्य वर्णजी का चित्र अंकित है। ये दोनों ही विशेष आवरण न केवल डाक टिकट संग्रहणकर्ताओं के लिए वरन् सम्पूर्ण जैन समाज के लिए बहुत ही संग्रहणीय एवं गौरवपूर्ण कवर हैं। ■

भगवां मे नेत्र परीक्षण शिविर संपन्न

भगवां। डॉ. महेन्द्र कुमार जैन जनकल्याण संस्था एवं अहिंसा पब्लिक स्कूल के सहयोग से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भगवां में निःशुल्क मोतियाबिंद लैंस प्रत्यारोपण नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 57 लोगों ने अपनी आँखों की जाँच कराई। इनमें से 17 मरीजों को चिह्नित किया गया। चिह्नित मरीजों का ऑपरेशन कर उन्हें रोशनी दी गई। शिविर में दवाइयाँ और चश्मे भी निःशुल्क वितरित किये गये। नेत्र सहायक डॉ. ओ.पी. पटेरिया ने मरीजों की जाँच की। कार्यक्रम में मुन्नीदेवी जैन, कपूरचंद जैन पूर्व प्राचार्य, सुरेन्द्र कुमार जैन प्राचार्य, रजनीश जैन, आलोक जैन एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भगवां के अशोक असाटी, लकी तिवारी, श्वेता भलावे, मीरा अहिरवार, सुनीता अहिरवार एवं ओ.पी. नामदेव का विशेष सहयोग रहा।

» आशावादी हर आपत्तियों में भी अवसर देखता है और निराशावादी बहाने।



दैहिक दूरी, एकांतवास और हमारी परम्पराएँ



» सिंघई सुभाष जैन
डॉक्टर (म.प्र.)
मो. 9200011181

आजकल सामाजिक दूरी और एकांतवास की चर्चा जोरों पर हैं। वास्तव में पिछली कुछ पीढ़ियों के सामाजिक जीवन व रहन-सहन के स्तर, स्वरूप पर विचार किया जाये तो हम पाएँगे कि यह कोई नई बात नहीं है। आधुनिकता ने हमारे संस्कार-सदाचार पर जो आवरण डाल रखा था उसे 'कोरोना वायरस' ने उखाड़ फेंका है। अब हमारे परम्परागत स्वच्छता रखने के व्यवहार को सम्मानित किया जाने लगा है। हम लोग जिन संस्कार, सभ्यता को छोड़ रहे थे अब सम्पूर्ण विश्व उन्हें अपनाने में जुट गया है।

मुझे ध्यान है जब हम चार दशक पहले बाजार, स्कूल आदि से घर लौटते थे तब माँ पूछती थीं - बेटा मुँह-हाथ धोये कि नहीं। घर के बाहर पानी से भरी बाल्टी रखी होती थी। बाल्टी थाली से ढंकी होती थी। थाली पर लोटा रखा होता था। हम घर के अंदर घुसने से पहले चरणपादुका उतार कर हाथ-पैर धोया करते थे। उसके बाद परम्पराओं की धज्जी उड़ाई जाने लगी। घर में आने वाले सभी व्यक्ति चप्पल-जूते पहने हुये ही अंदर रसोई तक आने लगे। हमें ध्यान है कि हम बचपन में भोजन करने के पहले मुँह, हाथ व पैर धोकर बस्त्र बदलते थे। आजकल तो बुफे व्यवस्था में तो सीधे ही प्लेट

लेकर रुचि वाली चीज पर चील की भाँति झपट्टा मारने की दुःसंस्कृति का जन्म हो गया है।

परदेश से अस्त्र बनकर आया 'कोरोना' अतिथि हमारे देशवासियों पर शनैः-शनैः: अदृश्य आक्रमण करके मेजमान को यमराज के हाथों में सौंप रहा है। यदि उसकी गति तेज हो गई तो हमें भारी मात्रा में मानव, अर्थिक, विकासशीलता का नुकसान उठाना पड़ सकता है। कोरोना से लड़ने के लिये नाना प्रकार के उपाय, उपचार किये जा रहे हैं। सबसे पहले 'दैहिक दूरी' का कहा जा रहा है। प्रत्येक स्त्री या पुरुष दूसरे से छह फीट की दूरी बनाकर रहे। यह हमारी पुरानी सभ्यता का पुनरालोकन ही तो है जबकि बीमारी की आशंका में गाँव-कस्बे के रहवासी दूरी बनाकर रखते हैं। बस्ती की साफ-सफाई करने वालों से इसी कारण दूरी बनायी जाती थी। घर-परिवार में स्त्री के माहवारी के समय वह सभी से दैहिक दूरी बनाकर रखा करती थी। वह अपना भोजन, बिस्तर भी परिवार के अन्य सदस्यों से दूर रखा करती थी। ऐसा अभी भी प्रचलन में देखा जा सकता है। कोरोना से बचाव के लिये एकांतवास में रहने की भी चर्चा की जा रही है। हमारे पूर्वज भी गंभीर बीमारी होने या शंका होने पर गाँव-बस्ती के बाहर कुटिया बनाकर रहा करते थे। उनके अन्न-पानी की व्यवस्था गाँव से की जाती थी। विश्व में हमारी पुरानी परम्पराएँ फिर से वृद्ध पैमाने पर चर्चा में आ रही है। भारत को 'विश्व गुरु' माना जाना लगा है।

हमें सर्दी-जुकाम होने पर काली मिर्ची, सौंठ, लौंग आदि का काढ़ा पिलाया जाता था। रात्रि में दूध में हल्दी मिलाकर दी जाती थी। चोट लगने पर धी और हल्दी का लेप लगाया जाता था। शीत ऋतु में शारीरिक तकलीफ होने पर दिन भर गर्म पानी पीने और नमक के गरोर करने की सलाह दी जाती थी। इन्हीं सभी व्यवहारों को आजकल 'रोग प्रतिरोधक क्षमता' बढ़ाने के लिये उपयोग करने का मार्गदर्शन दिया जा रहा है। संक्रामक बीमारी तो कमज़ोर व्यक्ति पर ही आक्रमण करती है। अतः अब पूर्णतः स्वस्थ बने रहने के लिये भारत की पुरानी परम्पराओं को चर्चा में लाकर महत्व दिया जाने लगा है। कोरोना वायरस से लड़ने के लिये घरबंदी करना और एकांतवास किया जाना हमारी परम्परा का पुनः पालन है। पुराने जमाने में घर में या बाहर जंगल में अकेले रहकर अवसाद से निपटने की जानकारी भी मिलती है। यही कारण है कि सूचना-प्रसारण मंत्रालय एकांतवास से प्रभावित होकर बनवास की गाथा कहती रामायण का प्रसारण दूरदर्शन पर करवा रहा है। ■

गोलापूर्व महिला इकाई का गठन



बम्होरी। 01 मार्च को बम्होरी में अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा के महिला प्रकोष्ठ के संयोजक एवं उपाध्यक्ष श्री चक्रेश शास्त्री, मंत्री श्री प्रेमचंद बरेठी, बम्होरी समाज के अध्यक्ष श्री शिखरचंद जी, डॉ श्री अजित जैन, श्री अशोक सिंघई, श्री चंद्रकुमार जी, महिला मंडल बम्होरी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति में गोलापूर्व महिला इकाई के गठन का संकल्प पारित किया एवं 20 महिलाओं ने सदस्यता ग्रहण करने हेतु अपना नाम अंकित कराया।



प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन मूल्य



» प्रो. भागचंद्र जैन 'भागेन्द्र'

निर्देशक, संस्कृत, प्राकृत तथा जैन विद्या

अनुसंधान केन्द्र, दमोह

फोन : 07812-221135, मो. 9425455338

**प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में भारतीय परम्परा में बहुलता
और विविधता के सन्दर्भ में 'प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन
मूल्यों' का निर्दर्शन इस आलेख में किया गया है।**

(गतांक से आगे)

'गाहा सत्तसई' में चमत्कारपूर्ण सूक्तियों की बहुलता है। बताया है कि संसार में बहरों और अंधों का ही समय सुख से बीता है क्योंकि बहरे कटु शब्द सुन नहीं सकते और अंधे दुष्टों की समृद्धि नहीं देख पाते। कृपण के लिए उसका फल उसी प्रकार निष्फल है, जिस प्रकार ग्रीष्म की कड़ी धूप में पथिक के लिए उसकी छाया।

वक्र : टेढ़े स्वभाव और अवक्र : सीधे स्वभाव वालों का साथ कभी नहीं निभ सकता। तभी तो सीधे बाण से टेढ़ा धनुष दूर फेंक देता है। कवि ने इस तथ्य का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है-

चावो सहावसरलं, विच्छिवड सरं गुणमिथ वि पडंतं।

वंकस्स उज्जुअस्स अ संबंधो किं चिरं होई॥ 1524॥

'गाहा सत्तसई' में केवल शृंगार रस की गाथाएँ संग्रहीत नहीं हैं अपितु नीति एवं अन्य भावों की व्यंजक गाथाएँ भी हैं। सर्वत्र एक विशिष्टता देखने को मिलती है कि अभिव्यक्ति वक्रतापूर्ण एवं ध्वनि समन्वित है। सीधी सपाट गाथा कोई है ही नहीं। निम्न गाथा में सज्जनों एवं विद्वानों की दीनता की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है, किन्तु शैली वही है जो शृंगार परक गाथाओं में देखने को मिलती है-

जे जे गुणिनो जे जे अ चाइणो जे विडङ्गु-विण्णाणा।

दारिद्र रे विअक्खण! ताण तुमं साणुराओ सि॥ गाथा 7.7॥

(जो कोई गुणवान् है, त्यागी है, ज्ञानवान् है, अरे चतुर दारिद्र्य! तू उन्होंने प्रेम करता है, उनके प्रति तुम्हें अनुराग है।)

3. वज्जालगं : प्राकृत भाष्य में रचित सुभाषितों/कोषों की परम्परा में

'वज्जालगं' का अनुपम स्थान है। इसके संकलनकर्ता जयवल्लभ (ई. 75071336 के मध्य) जैन मुनि थे। वज्जा (ब्रज्या) शब्द देशी है। असका अर्थ पथ या पद्धति है, और लग्न (लग्न) का अर्थ है- प्रकरण या अधिकार। इस ग्रंथ में मूल में 48 वज्जाओं में विभक्त 700 गाथाएँ थीं, किन्तु सम्प्रति 95 वज्जाओं में 795 गाथाएँ मिलती हैं। जयवल्लभ ने महाकवियों की अनुभूतियों में मूल्यात्मक अनुभूतियों को संजोकर प्रत्येक वज्जा में उस-उस विषय से संबंधित गाथाओं को एकसाथ प्रस्तुत किया है। ये गाथाएँ सच्ची मानवता के प्रसार का सदेश देती हैं। गुणों (मूल्यों) के ग्रहण में आस्था करते हुए 'वज्जालगं' का कथन है-

जम्मंतरं न गरुयं गरुयं पुरिस्सम् गुणगणारुहणं।

मुत्ताहलं हि गरुयं, न हु गरुयं सिप्पिसंपुडयं॥ (वज्जालगं, गाथा 687)

(व्यक्ति द्वारा गुणों (मूल्यों) का ग्रहण महान होता है, उसके लिए जन्म-संयोग महान नहीं होता है।)

जड़ नस्थि गुणा ता किं कुलेण, गुणिणो कुलेण न हु कज्जं।

(वज्जा. 685)

यदि गुण नहीं हैं तो उच्च कुल से क्या लाभ है?

जो लोग मूल्यों का जीवन नहीं जीते हैं, उनसे किसी को कोई लाभ नहीं होता है। (गाथा 705)

वास्तव में देखा जाए तो समाज की शोभा गुणी व्यक्ति से ही होती है, जैसे तालाब की शोभा हंस से होता है (262)। मूल्यों- सहित और मूल्यों-रहित व्यक्ति में बहुत भेद होता है। जैसे हंस और बतख में। हंस और कौए में (257, 258, 260)। मूल्यों सहित व्यक्ति दूसरों के थोड़े गुणों की भी प्रशंसा करता है (748)। वह प्रकृति को देखकर सोचता है कि चन्द्रमा का क्षय होता है, किन्तु तारों का नहीं। चन्द्रमा की ही वृद्धि होती है, तारों की नहीं होती। इसी प्रकार महान व्यक्तियों की ही उत्तरि और अवनति होती है जबकि साधारण आदमी हमेशा गिरा हुआ ही होता है (267)। इसी प्रकार से इस ग्रंथ में प्राकृत का महत्व, परोपकार, स्नेह और मित्रता, मृदु वचन, शुद्ध संकल्प, सत्कर्म, साहस-धैर्य, आत्मसम्मान की रक्षा, विनय, कृतज्ञता, गंभीरता, ज्ञान, अभय, उदारता, वचन पालन, कुसंगति त्याग, और क्षमा आदि विशिष्ट जीवन मूल्यों की सोदाहरण विवेचना हुई है।

इस ग्रंथ में दुष्टों का मार्मिक वर्णन हुआ है। सज्जन क्रोध नहीं करता, यदि करता है तो अमंगल नहीं सोचता, यदि सोचता है तो कहता नहीं, और यदि कहता है तो लज्जित हो जाता है (34)।

मित्रता के प्रसंग में जल और दूध का उदाहरण दिया गया है। जल जब मिलता है, तब दूध को अधिक बना देती है, और औंटाने पर पहले वही जलता है। सच्चा मित्र वही है, जो आपत्ति में पहले काम आता है (67)।

इसी प्रकार दरिद्रता में भी एक गृहिणी के त्याग और तप की पराकाश तब हो जाती है, जब वह स्वयं भूख से पीड़ित होने पर भी, बालकों के खाने से बचा हुआ भोजन दुखियों में बाँट देती है।

डिंभाण भुनसेसं छुहाकिलंता विदेझ दुहियाण।

कुलगोरवेण वरईउ रोरघरिणीउ द्विज्जंति॥ -वज्जालगं गाथा 461

'वज्जालगं' में आदर्श गृहिणी का बहुत ही हृदय स्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया गया है-

भुजङ्ग भुजियसेसं सुप्पङ्ग सुप्पम्मि परियणे सयले।

पद्मं चेय बिबुज्ञङ्ग घरस्म लच्छी न सा धरणि॥ -गाथा 455

(पूरे परिवार के भोजन कर लेने पर जो कुछ बच जाता है, उसे ही खाकर संतुष्ट रहती है, समस्त कुटुम्बियों के सो जाने के अनन्तर सोती है और प्रातःकाल सबसे पहले जाग जाती है, ऐसी स्त्री गृहिणी नहीं, गृहलक्ष्मी होती है- 455)

पत्ते पियपाहुणए मंगल वलयाङ्ग विकिकणन्नीए।

दुग्गयधरिणी कुलवालियाए रोवाविओ गामो॥ -गाथा 4.58

(गरीब के घर की गृहिणी के यहाँ कोई अत्यंत प्रिय अतिथि आ गया, घर में अतिथि के भोजन योग्य अन्न नहीं है, इस स्थिति में वह अपने घर की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपना मंगलकण (विवाह के समय सौभाग्य चिह्न के रूप में प्राप्त कंकण), को भी बेचकर भोजन सामग्री का प्रबंध करती है। उसकी यह विवशता पूरे गाँव को रुला देती है।) 458

उक्त गाथाओं में नारी के उस उज्ज्वल चरित्र का अंकन किया गया है जो भारतीय नारी का सनातन आदर्श है। ‘सज्जणवज्जा’ के प्रारंभ में कवि आश्र्वय प्रकट करता है कि समुद्र मंथन से चन्द्रमा, कल्पवृक्ष और लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है, पर इनसे भी बढ़कर सुन्दर और सुखद इस सज्जन की उत्पत्ति कहाँ से हुई है, यह नहीं कहा जा सकता (32)। सज्जन व्यक्ति का स्वभाव शुद्ध होता है। दुर्जन व्यक्ति यदि सज्जन को मलिन भी करना चाहे तो वह मलिन नहीं होता, बल्कि क्षार या राख से भले दर्पण के समान और अधिक चमकने लगता है (33)। क्रोध करने पर भी अपने मुख से कटु भाषण नहीं करता। जिस प्रकार चन्द्रमा राहु के मुख में जाने पर भी अमृत की वर्षा उसी प्रकार पीड़ा दिये जाने पर भी सज्जन व्यक्ति अन्य लोगों को सुख पहुँचाता है। सामान्य रूप से मनुष्य का स्वभाव है कि प्रिय उपकार करने वाले व्यक्ति का वह प्रिय उपकार करता है, पर सज्जन का यह स्वभाव है कि अप्रिय करने वाले का भी प्रिय साधन करता है (39)। चन्द्रन वृक्ष के समान फल रहित होने पर भी सज्जन व्यक्ति अपने शरीर द्वारा परोपकार करते हैं (48)। सज्जनों के स्वभाव एवं गुणों की ऐसी उत्कृष्ट प्रशंसा अन्यत्र नहीं मिलती।

‘नीति वज्जा’ का एक पद्म अत्यंत प्रेरक है, जिसके अनुसार- दूसरे व्यक्ति के विद्यमान तथा विद्यमान दोषों का वर्णन करने से आपको न तो यश मिलता है और न कोई धन, ऐसा करने से कोई लाभ तो नहीं होगा, वह आपका शत्रु अवश्य बन जाएगा (82)।

‘वज्जालग्नं’ में आदर्श नागरिकता के साथ उन जीवन मूल्यों का निर्दर्शन होता है जो उसके सच्चे रूप का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते हैं। देश-निर्माण के लिए इस प्रकार की कविताएँ जिनमें त्याग, सेवा एवं परोपकार की वृत्ति अन्तर्निहित है, बड़ी उपयोगी हैं।

4. कुवलयमाला : श्री उद्योतन सूरि (779 ई) के द्वारा गद्य-पद्म मिश्रित महाराष्ट्री प्राकृत की प्रसाद गुण पूर्ण रचना ‘कुवलयमाला’ चम्पू काव्य की शैली में रचित है। यह प्राकृत चम्पू काव्य का अनुपम रत्न है।

इसके नायक कुवलयचन्द्र और नायिका कुवलयमाला हैं। कुवलयमाला द्वारा घोषित शर्त के अनुसार एक गाथा के पाद की पूर्ति कर दिये जाने पर ही कुवलयमाला कुमार के गले में माला डालकर उसका वरण करती है।

इस ग्रंथ में क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह के मूर्तिमान प्रतीक-चंडसोम, मानभट, मायादित्य, लोभदत्त एवं मोहदत्त हैं। ये पाँचों व्यक्ति इस संसार में जो पाप होते हैं या हो सकते हैं- हत्या, छलकपट, मिथ्या घमंड, बेर्इमानी एवं व्यभिचार आदि उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। मानवीय जीवन में अस अंधकारमय पक्ष को उभारकर उद्योतन सूरि ने विश्लेषित किया है कि इन पाँचों व्यक्तियों ने अपने जघन्य कृत्यों का केवल पश्चाताप ही नहीं किया, प्रत्युत अपनी असद् वृत्तियों के परिष्कार के लिए साधु जीवन को अंगीकार कर लिया था। लेखक यहाँ परोक्ष में स्व-निरीक्षण और आत्मालोचना के महत्व को भी प्रतिपादित कर देता है। ये वह भी चाहते हैं कि लोग इन व्यक्तियों के कर्मफल को देखकर दूर से ही इन पापों से बचने का प्रयत्न करें :-

जं चंडसोम-आई-कुत्तंता पंच ते वि कोथाई।

संसारे दुक्ख-फला तप्हा परिहरसु द्वैणा॥ -280.20

इस प्रकार इस ग्रंथ में क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह का दुष्परिणाम दिखाने के लिए अनेक शिक्षाप्रद कथाएँ उपन्यस्त हैं तथा विविधता में एकता के निर्दर्शक अनेक प्रसंग इस ग्रंथ में वर्णित हैं। यथा- विभिन्न भाषाभाषी विद्यार्थीगण एक साथ रहकर सद्भावनापूर्वक आपस में वार्तालाप करते हैं।¹ इसी प्रकार खनिज व्यापार के लिए दूर-दूर तक भ्रमण, विविध भाषा-भाषी व्यापारियों के समूह एक ही बोली/भाषा के कुछ शब्दों का प्रयोग करते हैं।

कुवलयमाला में जीवन मूल्यों के प्रतिपादक देवकुल, आरोग्यशाला, पाठशाला, मठ, समवशरण आदि के मनोरम वर्णन तो हैं ही, इसकी सूक्तियाँ और नीति वाक्य भी प्रेरणाप्रद हैं। जैसे-

1. यदि विमलयश की आकांक्षा है तो अपनी प्रशंसा मत करो। (43.32)
2. जिस प्रकार हवा से उड़ने वाला धूल का एक कण में आँख में गिर जाने से दुःख देता है, उसी प्रकार थोड़ा सा भी अपमान विमल सज्जनों के हृदय को भेद देता है। (103.29)
3. अपना दुःख उससे कहना चाहिये जो हृदय के काँटे को निकाल सके। (107.12)
4. सज्जन कभी दूसरों को दुःख देने वाला वचन नहीं बोलते। (134.1)

5. आचार्य हरिभद्र सूरि का कथा साहित्य (800 ई) : आचार्य हरिभद्र (800 ई) बहुमुखी प्रतिभाशाली लेखक हैं। इनके द्वारा रचित कथा साहित्य में जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है। लेखक अपने पात्रों के माध्यम से जीवन मूल्यात्मक आवश्यक और उपयोगी बातों का निरूपण कर देता है।

हरिभद्र सूरि की प्राकृत भाषा में लिखी गई निम्नलिखित कथा कृतियाँ हैं : 1. समराइच्चकहा, 2. धुत्तक्खाण, 3. दशवैकालिक की हारिभद्रवृत्ति, और 4. उपदेश पद समराइच्च कहा:

दे.- 1. कुवलयमाला कहा : 151.18

2. विस्तार के लिए देखिए- कुवलयमालकहा का सांस्कृतिक अध्ययन :

डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्रका. प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, 1975 ई., पृ. 256-258

आ. हरिभद्र की प्राकृत कथाओं में जीवन निर्माण की प्रचुर सामग्री प्रयुक्त हुई। 'समराइच्चकहा जैन महाराष्ट्री प्राकृत में रचित शान्तरस प्रधान कृति है। इसमें उज्जैन के राजा समरादित्य और प्रतिनायक अग्निशर्मा के जन्मों (भवों) का वर्णन है। प्रत्येक कथा के साथ अवान्तर कथाएँ हैं। यह कथा ग्रंथ साहित्यिक गुणों के साथ-साथ महनीय सांस्कृतिक गुणों से भी ओतप्रोत है। इसके माध्यम से हम विविध प्रकार के जीवन मूल्यों को प्रपत कर सकते हैं। इस ग्रंथ में कहा गया है कि किसी को अपनी जाति का गर्व नहीं करना चाहिये। पुनर्जन्म और कर्म सिद्धांत में लेखक की अटल निष्ठा है। इन कथाओं से सदाचार और शुभ कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। जीवन मूल्यों की सम्प्रतिष्ठा हेतु महोत्सवों और संगोष्ठियों की संयोजना भी निर्दर्शित है।

(2) धृत्तक्खाणं (धूर्ताख्यानम्) : हरिभद्र के द्वारा रचित दूसरा कथा ग्रंथ 'धूर्ताख्यानं' व्यंग्य प्रधान उल्लेखनीय रचना है। इसमें पुराणों में वर्णित असंभव और अविश्वसनीय बातों का प्रत्याख्यान पाँच धूर्तों की कथाओं द्वारा किया गया है। लाक्षणिक शैली में निबद्ध यह अनुपम रचना है। इसमें अन्यापदेशिक/अन्यापेक्षित/ शैली द्वारा असंभव, मिथ्या, और कल्पनीय निद्या आचरण की ओर से जाने वाली बातों का निराकरण कर स्वस्थ, सदाचारी और संभव प्रस्थानों की ओर संकेत किया है। धूर्तों का व्यंग्य प्रहर ध्वंसात्मक नहीं, निर्माणात्मक है।

समराइच्चकहा और धूर्ताख्यानं इन दो बड़े कथा ग्रंथों के अतिरिक्त हरिभद्र की लगभग 120 लघु प्राकृत-कथाएँ 'दशवैकालिक की टीका' में और उपदेश पदों में उपलब्ध हैं।

हरिभद्र सूरी की कुछ कथाओं में चरित्र, कुछ में भावना और वृत्ति, कुछ में नीति और कुछ में शील-स्थापत्य की प्रधानता है। इनकी कथाओं में आद्यन्त लोक मंगल की भावना विद्यमान है। प्राणियों की रक्षा, अनुकर्मा और दयालुता में ही कल्याण निहित है। सभी प्राणी सुखी, शांत, स्वस्थ और कल्याण का जीवन व्यतीत कर सके, यही उद्देश्य हरिभद्र का है। उनकी कथाओं में लोक-जीवन के विकास के लिए धर्मश्रद्धा सात्त्विक बुद्धि के निर्माण हेतु निर्दर्शित हैं। पंचव्रत रूप धर्म की श्रद्धा ही मानव मात्र की सम्पत्ति है तथा जिनके द्वारा लोक कल्याण और लोकोदय होता है- अहिंसा, सत्य और दान का माहात्म्य और स्वरूप जनमानस को स्वस्थ और मंगलमय बनाने में पूर्ण सक्षम है। हरिभद्र ने जीवन के कटु और मधुर अनुभवों की नीतिमूलक व्याख्या उपस्थित कर कथाओं में जीवन प्रेरक उपदेशों का विच्यास किया है।

हरिभद्र ने 'मसराइच्चकहा' में प्रचुर मात्रा में सूक्तियों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। ये बड़ी मनोरम तथा अनुभवपूर्ण हैं। जैसे-

1. न य मियंकबिम्बाओ अंगारबुद्धीओ पदन्ति। -स./प्र.भ./पृ.20
चन्द्रमा के अंगारों से वर्षा नहीं होती।
2. सयलदुक्खतरु बीयभूया अमेत्ती। -वही, पृ.33
शत्रुता समस्त दुःखों का बीज है।

3. नथि अविसओ कसायाणं। -वही, पृ. 36
कषाय के विषयों की कहीं भी कमी नहीं है।
4. किं न संभवन्ति लच्छनिलयेसु कमलेसु किमओ। -वही, च.भ. पृ. 268
क्या सुन्दर कमलों में कीड़े नहीं होते?
5. न खलु अविवेगओ अन्नं जोव्याणं। वही, च.भ. प. 35
युवावस्था अविवेकपूर्ण होती है।
6. दुज्जणजणमि सुक्यं असुहफलं होइ सज्जणजणस्म।
जय भुयगस्स विद्विनं खीरं पि विसत्तणमुवेइ। -वही, ष.भ. पृ. 514
दुर्जन के साथ किया गया उपकार उसी प्रकार अशुभ पल देता है जिस प्रकार सर्प को दूध पिलाने पर भी विष ही उत्पन्न होती है।
7. सुहाहिलासिणा खु थे वो वि वज्जियव्वो पमाओ। -वही, स.भ. पृ. 722
सुखाभिलासी को थोड़ा सा भी प्रमाद नहीं करना चाहिये।
8. धम्मो मङ्गलमउलं ओसहमउलं च सव्वदुक्खाणं।
धम्मो वलमवि विउलं धम्मो ताणं च सरणं च। -वही, 1.13
धर्म अद्वितीय कल्याणकारक है, धर्म समस्त दुःखों की अनुपम दवा है। धर्म ही विपुल शक्ति, रक्षा और शरण है।

6. लीलाबर्डि कहा (लीलावती कथा) : 'लीलाबर्डि कहा' श्री जिनेश्वरसूरि (11वीं शती) की रचना है। इसमें राजगृह के राजा सिंहराज और रानी लीलावती के कथा प्रसंग के माध्यम से शील संरक्षण तथा क्रोधी, मानी, मायावी और लोभी जीवों के स्वाभाविक चित्र उपस्थित कर जीवन मूल्यों का निर्दर्शन किया गया है।

7. वसुदेवहिण्डी : 'वसुदेवहिण्डी' में श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव की हिण्डी (भ्रमण) का वर्णन है। अतः इसे 'वसुदेव चरित्र' नाम से भी कहा गया है। यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है- प्रथम भाग के रचयिता संघदासगणि वाचक और दूसरे खंड के धर्मसेन गणी हैं। इनका समय 5वीं शती माना जाता है। प्राचीन महाराष्ट्री प्राकृत में रचित इस कथा ग्रंथ में 100 लंभक हैं। यह विश्व साहित्य का महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय ग्रंथ है।

इस कथा ग्रंथ का संदेश है कि सुसंस्कार ही मानव जीवन को मूल्यवान बनाते हैं। वस्तुतः 'वसुदेवहिण्डी', भारतीय सांस्कृतिक जीवन का अनंत अक्षय कोष है। अतएव, इसमें बहुविध सांस्कृतिक उज्ज्वल चित्र विनिशेत हैं।'

भारतीय समाज के दूषित पक्ष के प्रति सतर्क दृष्टि रखने वाले कथाकार संघदासगणी ने गौतम-अहल्या कथा (प्रियंगुसुन्दरी लम्भः पृ. 292) के वर्णन द्वारा परदारदोष में वासव का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस प्रकार के दूषित कृत्यों से समाज को नैतिक मार्ग से च्युत करने वाले पाखंडी पुरुषों और स्त्रियों के लिए कठोर दंड का प्रावधान वर्णित कर किया है। लोक जीवन के असत् पक्ष के लोमहर्षक उल्लेखों द्वारा उनके पतन का वर्णन सत् पक्ष के प्रतिष्ठापक जीवन मूल्यों का दिग्दर्शन कराता है।² संकट की घड़ी में कैसे सहयोग करना, पाप कार्यों से समाज में अप्रतिष्ठा और अंतोगत्वा नरक का द्वार और पुण्य कार्यों से स्वर्ग की प्राप्ति तथा समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त होता था।³

1. विस्तार के लिए देखिए- वसुदेवहिण्डी : भारतीय जीवन और संस्कृति की बृहत्कथा:

डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव : प्रका. प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, 1993 ई., पृष्ठ 319 और आगे।

2. वही, पृ. 307

3. वही, पृ. 388

‘वसुदेव हिण्डी’ में संघदासगणी ने अपनी पद्यगच्छी भाषा में कथा-चमकार उत्पन्न करने की दृष्टि से नैतिक प्रसंगों के बीच सरस सूक्तियों का मनोहरी गुम्फन वैसे ही किया है जैसे नील कमलों के बीच लाल कमल खिले हों। विभिन्न विषयों का बोध करने वाली सूक्तियों में अनुभूतियों एवं जीवन मूल्यों का उल्कृष्ट उद्भावन हुआ है। कुछ सूक्तियाँ यथा-

1. जीएण वि कुण्डि पियं मित्तत्ति। (291.9-10)
मित्र अपना जीवन देकर भी भलाई करता है।
2. सवथ्थ नाणं परित्ताणं। (13.30)
सर्वत्र ज्ञान ही परित्राण करता है।
3. जीवंतो नरो भद्रं पस्सङ्। (247.21)
जीवित मनुष्य ही कल्याण देखता है।
4. सुहे जो न मज्जति दुक्खे य जो न सीयति सो पुरिसो, इयरो अवयरो। (249.8-9)
जो न तो सुख में ही मग्न होता है और न दुःख में ही छटपटाता है, वही पुरुष है, उससे इतर तो अर्थम् ही है।
5. उच्छाहे सिरी वसति, दरिद्रो य मयसमो, सयणपरिभूओ य धी जीवियं जीवङ्। (145.24-25)
उत्साह में श्री का निवास होता है, दरिद्र तो मृतवत होता है, फिर स्वजन से अपमानित व्यक्ति तो धिक्कारपूर्ण जीवन जीता है।
6. सीहस्स दंता केण गणेयव्वा? (107.8)
सिंह के दाँतों को कौन गिन सकता है?
7. आभरणथाणमपत्तं र्घ्यणं विणासियं होङ्। (132.30)
जो रत्न आभरण की जगह नहीं लेता, वह नष्ट अर्थात् निर्मूल्य हो जाता है। ‘वसुदेवहिण्डी’ अनेकान्तवादी कथाशैली में परनिबद्ध हुई है। इसमें भारतीय संस्कृति के उच्चतम शिखर पर पहुँचने का मूल्यवान प्रयास परिलक्षित होता है। साथ ही इसमें वैसे भारतीय सभ्यता चिन्तित हुई है, जिसके अन्तःस्थल में वर्तमान आध्यन्तर चेतना और संस्कृति भी प्रतिबिम्बित होती

कविता

प्रदूषण-पीड़ा

» अशोक खुर्देलीय

भोपाल

सुना है, हवा शुद्ध और पानी शुद्ध
पीकर बन गए, गौतम बुद्ध
लेकिन लगता है, अब निश्चित
इसी सदी में होगा, जल के लिये युद्ध
पर इसके लिए कौन है दोषी
क्या ये बात, कभी किसी ने सोची?
कोई और नहीं, हम खुद का कर रहे हैं शोषण
फैलाकर जल और वायु में, भारी प्रदूषण
कुरान हो या पुराण, वेद हो या बाइबिल
सभी में अभिनंदनीय है जल।
पर हम अपने-आप को समझने वाले धार्मिक
कितने हैं, मार्मिक

जो कभी दुर्गा के रूप में
कभी गणेश मूर्तियों में
कभी ताजिया सिराकर
और कुछ नहीं तो फालतू बहाकर
जल की गुणवत्ता गिराकर
खुद का और भावी पीढ़ी का
भविष्य उजाड़ रहे हैं
शायद हम अपना परलोक
सुधार रहे हैं।
कभी-कभी मैं सोचता हूँ हमारे
उक्त कृत्यों से परमात्मा भी
भी बड़ा दुखी होगा



क्योंकि उसने भी न सोचा होगा
कि, आस्था के नाम पर मनुष्य
उसे ही छलेगा
जल को देवता बनाकर पूजेगा
और प्रदूषण फैलाकर छलेगा
उसने तो जल की उत्पत्ति की थी
कृषि, पशु, प्रकृति और जन विकास के लिए
पर अब यहीं जल बन गया है
विनाश के लिए। ■

है। इस प्रकार ‘वसुदेवहिण्डी’ जीवन के मूल्यों के सन्दर्भ में भारत का विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसकी चरम परिणति वसुदेव में दिखाई गई है।

उपसंहार

‘प्राकृत ग्रंथों में प्रयुक्त जीवन मूल्य’ शीर्षक प्रस्तुत आलेख में मैंने कथित प्रतिनिधि ग्रंथों से सार्वभौम मूल्यपरक विवेचन द्वारा जीवन को सुखी बनाने वाले सिद्धांतों का संक्षिप्त निबंधन करने का विनम्र उपक्रम किया है। वस्तुतः इस कामदुधा प्राकृत भाषा में उपलब्ध साहित्य निधि में से भारतीय जीवन के उदात्त आदर्श, सांस्कृतिक अवबोध, और कला चेतना की वह गरिमा, जिसके द्वारा प्रेयस, श्रेयस और निःश्रेयस की प्राप्ति होती है, एक साथ समाहित करने का एक विनम्र और लघु प्रयत्न मैंने किया है। वस्तुतः इस अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर एक-एक ग्रंथ पर स्वतंत्र रूप से चर्चा/आलेख द्वारा प्रस्तुत किये जाने आवश्यकता है।

आचार्य कुन्दकुन्द के इस कथन के साथ अपने कथन को विराम दूँगा :-

ण वि देहो वंदिज्जदि णंविय कुलो णविय जादि संजुतो।

को वंददि गुणहीणो, णहु समणो णेव सावगो होदिः। -दंसण, 27

न तो शरीर की वंदना की जाती है और न कुल की। उच्च जाति की भी वंदनान हीं की जाती। गुणहीन की तो वंदना करेगा ही कौन? क्योंकि न तो गुणों के बिना कोई मुनि हो सकता है और न ही श्रावक। -दंसण 27

पुनः आ. कुन्दकुन्द कहते हैं-

सीलं जेसु सुसीलं सुजीविदं माणुसं तेसिं। -सील.18

भले ही कोई हीन जाति का हो, सौन्दर्यविहीन कुरुप, विकलांग हो, झुर्रियों से युक्त वृद्धावस्था को भी प्राप्त क्यों न हो, इन सभी विरूपों के होने पर भी यदि वह उत्तम शील का दारक हो तथा यदि मानवीय गुण जीवित हों तो उस विरूप का भी मनुष्य जन्म श्रेष्ठ एवं वंदनीय है। -सील.18 ■



आयुर्वेदिक दोहे

पानी में गुड़ डालिये, बीत जाए जब रात।
सुबह छानकर पीजिये, अच्छे हों हालात॥

धनिया की पत्ती मसल, बूँद नैन में डार।
दुखती अंखियाँ ठीक हों, पल लागे दो चार॥

ऊर्जा मिलती है बहुत पीएँ गुनगुना नीर।
कब्ज खत्म हो पेट की, मिट जाए हर पीर॥

प्रातःकाल पानी पीएँ, धूँट-धूँट कर आप।
बस दो-तीन गिलास है, हर औषधि का बाप॥

ठंडा पानी पीयो मत करता ऋूर प्रहर।
करे हाजमे का सदा, ये तो बंटाढार॥

भोजन करें धरती पर, अल्थी-पल्थी मार।
चबा-चबा कर खाइये, वैद्य न झाँके द्वार॥

प्रातःकाल फल रस लो, दुपहर लस्सी छाँछ।
सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश॥

प्रातःकाल दोपहर लीजिये, जब नियमित आहर।
तीस मिनट की नीद लो, रोग न आवे द्वार॥

भोजन करके रात में घूमे कदम हजार।
डॉक्टर, ओझा, वैद्य का, लुट जाए व्यापार॥

धूँट-धूँट पानी पीयो, रह तनाव से दूर।
एसिडिटी या मोटापा, होवें चकनाचूर॥

आर्थराईज या हार्निया, अपेंडिक्स का त्रास।
पानी पीजे बैठकर, कभी न आवे पास॥

रक्तचाप बढ़ने लगे, तब मत सोचो भाव।
सौगंध राम की खाई के, तुरत छोड़ दो चार॥

सुबह खाइये कुँवर सा, दोपहर यथा नरेश।
भोजन लीजे शाम में, जैसे रंक सुजीत॥

देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल।
अपच आँख के रोग संग, तन भी रहे निढाल॥

दर्द घाव फोड़ा चुभन, सूजन चोट पिराई।
बीस मिनट चुम्बक धरो, पिरवा जाई हेराई॥

सत्तर रोगों को करे, चूना हमसे दूर।
दूर करे ये बांझपन, सुस्ती अपच हुजूर॥

भोजन करके जोहिये, केवल घंटा डेढ़।
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेढ़॥



अलसी तिल, नारियल, धीर सरसों का तेल।
यही खाइये नहीं तो, हार्ट समझिये फेल॥

पहला स्थान सेन्था नमक, पहाड़ी नमक सु जान।
श्वेत नमक है सागरी, ये है जहर समान॥

अल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग।
आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालीस रोग॥

फल या मीठा खाइके, तुरत न पीजे नीर।
ये सब छोटी आँत में बनते विषधर तीर॥

चोकर खाने से सदा, बढ़ती तन की शक्ति।
गेहूँ मोटा पीसिये, दिल में बढ़े विरक्ति॥

रोज मुलहठी चूसिये, कफ बाहर आ जाय।
बने सुरीला कंठ भी, सबको लगत सुहाय॥

भोजन करके खाइये, सौंफ गुड़ अजवान।
पथर भी पच जाएगा, जानै सकल जहान॥

लौकी का रस पीजिये, चोकर युक्त पिसान।
तुलसी गुड़ सेन्था नमक, हृदय रोग निदान॥

चैत्र माह में नीम की, पत्ती हर दिन खावे।
ज्वर, डेंगू या मलेरिया, बारह मील भगावे॥

सौ वर्षों तक वह जिये, लेते नाक से साँस।
अल्पकाल जीये, करे मुँह से श्वासोच्छवास॥

सितम गर्म जल से कभी, करिये मत स्नान।
घट जाता है आत्मबल, नैनन को नुकसान॥

हृदय रोग से आपको, बचना है श्रीमान।
सुरा चाय या कोलिङ्क, का मत करिये पान॥

अगर नहावें गरम जल, तन-मन हो कमजोर।
नयन ज्योति कमजोर हो, शक्ति घटे चहुँओर॥

तुलसी का पत्ता करें, यदि हृदय उपयोग।
मिट जाते हर उम्र में, तन के सारे रोग॥ ■

(सौजन्य : दिशा बोध)



21वीं शताब्दी का धर्म जैन धर्म

» मुजफ्फर हुसैन, मुंबई

हम यहाँ कर्मकांड के रूप में नहीं, बल्कि दर्शन के आधार पर यह कहना चाहेंगे कि 21 वीं शताब्दी का धर्म जैन धर्म होगा। इसकी कल्पना किसी सामान्य आदमी ने नहीं की है बल्कि बर्नार्ड शॉ ने कहा है कि यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैन धर्म में पैदा होना चाहता हूँ। रेवरेंड तो यहाँ तक कहते हैं कि दुनिया का पहला मजहब जैन था। और अंतिम मजहब भी जैन होगा। बाल्ट यू.एस.ए. के दार्शनिक मोराइस का तो यहाँ तक कहना है कि यदि दुनिया ने जैन धर्म को अपनाया होता तो यह दुनिया बड़ी खूबसूरत होती।

जैन.... धर्म नहीं जीने का दर्शन है। सरल भाषा में मैं कहूँ तो यह खुला विश्वविद्यालय है। आपको जीवन का जो पहलू चाहिए वह यहाँ मिल जाएगा। दर्शन ही नहीं बल्कि संस्कृत कला संगीत एवं भाषा का यह संगम है। जैन तीर्थकरोंने संस्कृत को अपनाकर पाली और प्राकृत को अपनाया क्योंकि वे जैन दर्शन को विद्वानों तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि यह तो सामान्य आदमी तक पहुँचे और उसके जीवन का कल्याण करें।

दुनिया के सभी धर्मों ने अपने चिन्ह तय किए हैं। इसमें कुछ हथियारों के रूप में तो कुछ आकाश में चमकने वाले चाँद और सूरज के रूप में। 24 तीर्थकरों में एक भी ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता जिनके पास धनुष बाण हो गदा अथवा त्रिशूल हो। हथियारों से लैस दुनिया के राजा अपनी शानो शौकत से अपना दबदबा बनाए रखने में अपनी महानता समझते थे, लेकिन यहाँ तो ईश्वर के बनाए हुए पशु-पक्षी अथवा जलचर प्राणी उनके साथ हैं।

इंसान की सुविधा के लिए घोड़े, हाथी, गरुड़, मोर और न जाने किन-किन को अपनी सवारी बनाया लेकिन जैन तीर्थकर तो किसी को कष्ट नहीं देना चाहते हैं। वे अपने पाँव के बल पर सारी दुनिया को लांघते हैं और प्रकृति के भेद को जानने की कोशिश करते हैं। रहने को घर नहीं, खाने को कोई स्थाई व्यवस्था नहीं लेकिन दुनिया के कष्टों का निवारण करने के लिए अपनी साधना में कोई कमी नहीं आने देते।

हर वाद ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है, लेकिन हम देखते हैं कि जैन विचार ने मनुष्य को सबसे महान बना दिया है। दुनिया के अन्य धर्म मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाकर उसे जीवन यापन करने के लिए लाचार बना देते हैं लेकिन यहाँ तो मनुष्य की अपनी स्वतंत्रता सर्वोपरि है। जैन दर्शन में हिंसा को पराजित करने में तीन 'अ' का महत्व है। ये हैं अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह। तीनों एक दूसरे से जुड़े हैं। वे अलग नहीं हो सकते। भारत में न जीत सकने वाला सिकंदर जब एथेंस लौट रहा था तो उससे एक जैन साधु ने कहा था कि दुनिया को जीतने वाले, काश तुम अपने

आपको जीत सकते। जैन साधु सिकंदर के साथ गए थे।

दिग्म्बर जैन साधु कल्याण मुनि सिकंदर के बाद ही एथेंस में वर्षों तक लोगों को अहिंसा का सदेश देते रहे। एथेंस में सब कुछ बदल गया है, लेकिन आज भी वहाँ उन जैन साधु की प्रतिमा लगी हुई है। प्लेटो और एरिस्टोटल का एथेंस इतना प्रभावित हुआ कि पाइथागोरस जैसा महान गणितज्ञ यह कहने लगा कि मैं फैन हो गया हूँ।

21 शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी बनने वाली है। जैन मुनि तो कम पानी पीकर अपना काम चला लेते हैं, लेकिन हम जैसे लोग क्या करेंगे? इसका मूल मंत्र है शाकाहार। 21 वीं शताब्दी में जिस नारी स्वतंत्रता की बात की जाती है। जैन धर्म में झाँककर देखो तो जैन साधिव्यों को कितना बड़ा सम्मान मिलता है। वे पूजनीय हैं। धर्म को पढ़ाती है सिखलाती है। दासी और भोगिनी को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है। समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है।

जैन धर्म के भेदविज्ञान ने साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है। समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है। जैन धर्म का भेदविज्ञान आत्मा और शरीर को अलग कर देने वाला बहुत पुराना विज्ञान है। आत्मा ही तो परमाणु है और समस्त दुनिया में शक्ति का संचार करती है।

यदि आप अध्यात्म के आधार पर इसका विचार करते हैं तो फिर आपको जैन दर्शन की ओर लौटना पड़ेगा। नागरिकता और राष्ट्रीयता इन दिनों हर देश के मानव का आधार है। लेकिन जब तक समानता और स्वतंत्रता नहीं मिलती यह शब्द खोखले मालूम पड़ते हैं। मनुष्य के कष्टों का निवारण अंतर्राष्ट्रीय आधार पर उसका उद्धार केवल अनेकांतमयी जैन दर्शन के माध्यम से ही ही संभव है। ■



गोलापूर्व महिला इकाई मकरोनिया (सागर) द्वारा महावीर जयंती पर भोजन बनाकर जरूरतमंदों को वितरित किया गया।



100 जानकारी जिसका ज्ञान सबको होना चाहिए



» संकलन : कु. आस्था जैन

बी.ए.एम.एस. अध्ययनरत अंतिम वर्ष
पं. खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेदिक
महाविद्यालय, भोपाल

1. योग, भोग और रोग ये तीन अवस्थाएँ हैं।
2. विटामिन-डी की कमी से बच्चों में रिकेट्स रोग हो जाता है।
3. सुबह एक ग्लास नींबू पानी, हाई ब्लड प्रेशर में फायदेमंद है। साथ ही मेथी, अजवाइन का पानी या पोदीना, घनीची आवला को पानी के साथ पीसकर ज्यूस बनाकर पीएँ।
4. ट्राटक से नेत्र के सभी विकार दूर हो सकते हैं। साथ ही निरंतर प्रयोग से चश्मा भी उत्तर सकता है।
5. नवसादर तथा चूने को महीन पीसकर जल मिलाकर सूंधने से सिर की पीड़ा नष्ट हो जाती है।
6. शरीर में फास्फोरस के अधिक मात्रा में होने पर वह हड्डियों को भी कमजोर करता है।
7. सल्फर डाई ऑक्साइड या सल्फर प्रिजवर्ड पदार्थों के सेवन से अस्थमा, दमा की समस्या हो सकती है।
8. सिजेरियन ऑपरेशन - आयरन, कैल्शियम की कमी।
9. सभी क्षारीय वस्तुएँ दिन ढूबने के बाद खायें।
10. अम्लीय वस्तुएँ व फल दिन ढूबने से पहले खायें।
11. जम्भाई- शरीर में ऑक्सीजन की कमी।
12. जुकाम - जो प्रातःकाल जूस पीते हैं वो उसमें काला नमक व अदरक डालकर पियें।
13. ताम्बे का पानी - प्रातः खड़े होकर नगे पाँव पानी ना पियें।
14. किडनी - भूलकर भी खड़े होकर गिलास का पानी ना पियें।
15. गिलास एक रेखीय होता है तथा इसका सर्फेस टेन्शन अधिक होता है। गिलास अंग्रेजो (पुर्तगाल) की सभ्यता से आयी है। अतः लोटे का पानी पियें, लोटे का कम सर्फेस टेन्शन होता है।
16. अस्थमा, मधुमेह, कैंसर से गहरे रंग की वनस्पतियाँ बचाती हैं।
17. वास्तु के अनुसार जिस घर में जितना खुला स्थान होगा, उस घर के लोगों का दिमाग व हृदय भी उतना ही खुला होगा।
18. परम्पराएँ वहीं विकसित होंगीं जहाँ जलवायु के अनुसार व्यवस्थाएँ विकसित होंगीं।
19. पथरी- अर्जुन की छाल से पथरी की समस्याएँ खत्म हो जाती हैं।
20. आरओ का पानी कभी ना पियें। यह गुणवत्ता को स्थिर नहीं रखता। कुएँ का पानी पियें। बारिश का पानी सबसे अच्छा, पानी की सफाई के लिए सहिजन की फली सबसे बेहतर है।
21. सोकर उठते समय हमेशा दायीं करवट से उठें या जिधर का स्वर चल रहा हो उधर करवट लेकर उठें।
22. पेट के बल सोने से हर्निया, प्रोस्टेट, एपेंडिक्स की समस्या आती है।
23. भोजन के लिए पूर्व दिशा, पढ़ाई के लिए उत्तर दिशा बेहतर है।
24. एचडीएल बढ़ने से मोटापा कम होगा। एलडीएल व वीएलडीएल कम होगा।
25. गैस की समस्या होने पर भोजन में अजवाइन मिलाना शुरू कर दें।
26. चीनी में सल्फर होता है जो कि पटाखों में प्रयोग होता है, यह शरीर में जाने के बाद बाहर नहीं निकलता है। चीनी खाने से पित्त बढ़ता है।
27. शुक्रोज हजम नहीं होता है, फ्रेक्टोज हजम होता है और हर मीठी चीज में फ्रेक्टोज है।
28. वात के असर में नींद कम आती है।
29. कफ के प्रभाव में व्यक्ति प्रेम अधिक करता है।
30. कफ के असर में पढ़ाई कम होती है।
31. पित्त के असर में पढ़ाई अधिक होती है।
32. आँखों के रोग - कैट्रेक्टस, मोतियाबिन्द, ग्लूकोमा, आँखों का लाल होना आदि ज्यादातर रोग कफ के कारण होता है।
33. शाम को वात-नाशक चीजें खानी चाहिए।
34. प्रातः: 4 बजे जाग जाना चाहिए।
35. सोते समय रक्त दबाव सामान्य या सामान्य से कम होता है।
36. ग्रीष्म ऋतु में व्यायाम कम तथा शरद ऋतु में अधिक करना चाहिये। व्यायाम अपनी अर्ध शक्ति तक करना चाहिये।
37. भारत की जलवायु वात प्रकृति की है, दौड़ के बजाय सूर्य नमस्कार करें।
38. मासिक धर्म के समय किसी प्रकार का व्यायाम नहीं करना चाहिये।
39. निद्रा से पित्त शांत होता है, मालिश से वायु शांत होती है, उल्टी से कफ शांत होता है तथा उपवास (लंघन) से बुखार शांत होता है।
40. भारी वस्तुएँ शरीर का रक्तदाब बढ़ाती है, क्योंकि उनका गुरुत्व अधिक होता है।
41. दुनिया के महान वैज्ञानिकों का स्कूली शिक्षा का सफर अच्छा नहीं रहा, चाहे वह 8वीं फेल न्यूटन हों या 9वीं फेल आइंस्टीन हों।
42. माँस खाने वालों के शरीर से अम्ल-स्राव करने वाली ग्रैंथियाँ प्रभावित होती हैं।
43. तेल हमेशा गाढ़ा खाना चाहिए, सिर्फ लकड़ी वाली घाणी का। दूध हमेशा पतला पीना चाहिए।
44. छिलके वाली दाल-सब्जियों से कोलेस्ट्रोल हमेशा घटता है।
45. कोलेस्ट्रोल की बढ़ी हुई स्थिति में इन्सुलिन खून में नहीं जा पाता है। ब्लड शुगर का सम्बन्ध ग्लूकोज के साथ नहीं, अपितु कोलेस्ट्रोल के साथ है।
46. मिर्गी दौरे में अमोनिया या चूने की गंध सूँघानी चाहिये।
47. अधिक रक्त स्राव को रोकने के लिए बर्फ लगाना चाहिये।
48. भोजन के पहले मीठा खाने व बाद में खट्टा खाने से शुगर नहीं होता।
49. भोजन के आधे घंटे पहले सलाद खाएं, उसके बाद भोजन करें।
50. आरओ का पानी कभी ना पियें। यह गुणवत्ता को स्थिर नहीं रखता। कुएँ का पानी पियें। बारिश का पानी सबसे अच्छा, पानी की सफाई के लिए सहिजन की फली सबसे बेहतर है।

51. अवसाद में आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस की कमी हो जाती है। फास्फोरस गुड़ और अमरूद में अधिक है।
52. पीले केले में आयरन कम और कैल्शियम अधिक होता है। हरे केले में कैल्शियम थोड़ा कम लेकिन फास्फोरस ज्यादा होता है तथा लाल केले में कैल्शियम कम आयरन ज्यादा होता है। हर हरी चीज में भरपूर फास्फोरस होती है, वही हरी चीज पकने के बाद पीली हो जाती है जिसमें कैल्शियम अधिक होता है।
53. छोटे केले में बड़े केले से ज्यादा कैल्शियम होता है।
54. आयरन की कमी के लिए लौह युक्त खाद्य पदार्थ जैसे टमाटर, आंवला का मुरब्बा, बादाम खाना चाहिये।
55. पवन मुक्तासन पेट में भारीपन और कब्ज से निजात दिलाने में सहायक होता है।
56. कुलथी की दाल वजन कम करने व पथरी को हटाने में उपयोगी है।
57. गुड़ची/गिलोय कफ को कम करती है और इम्युनिटी पॉवर को बढ़ाती है।
58. मोटे लोगों में कैल्शियम की कमी होती है अतः त्रिफला दें। त्रिकूट (सोंठ+कालीमिर्च+मधा पीपली) भी दे सकते हैं।
59. अस्थमा में नारियल दें। नारियल फल होते हुए भी क्षारीय है। दालचीनी+गुड़+नारियल दें।
60. शीर्षासन तथा अर्ध शीर्षासन बालों को घना व मजबूत बनाता है।
61. दूध का सफेस टेंशन कम होने से त्वचा का कचरा निकालता है।
62. गाय का धी सबसे अधिक पितनाशक फिर कफ व वायुनाशक है।
63. जिस भोजन में सूर्य का प्रकाश व हवा का स्पर्श ना हो उसे न खाएँ।
64. गौ-मूत्र अर्क आँखों में ना डालें।
65. गाय के दूध में धी मिलाकर देने से कफ की संभावना कम होती है लेकिन चीनी मिलाकर देने से कफ बढ़ता है।
66. मासिक के दौरान वायु बढ़ जाती है। 3-4 दिन स्त्रियों को उल्टा सोना चाहिए इससे गर्भांशय फैलने का खतरा नहीं रहता है। दर्द की स्थिति में गर्म पानी में देशी धी दो चम्पच डालकर पियें।
67. रात में आलू खाने से वजन बढ़ता है।
68. भोजन के बाद वज्जासन में बैठने से वात नियंत्रित होता है।
69. प्राणायाम का अभ्यास तनाव, अस्थमा से संबंधित विकारों से छुटकारा दिलाने में मदद करता है।
70. अजवाईन अपान वायु को बढ़ाता है, जिससे पेट की समस्याएँ कम होती है।
71. पेट में मल बंध गया है तो अदरक का रस या सोंठ का प्रयोग करें।
72. कब्ज होने की अवस्था में सुबह पानी पीकर कुछ देर एड़ियों के बल चलना चाहिए।
73. अस्थमा से बचाव के लिए गिलोय चूर्ण में मुलेठी मिलाकर लें।
74. हल्दी नेचुरल लिवर डिटॉक्सीफायर है।
75. बिना कैल्शियम की उपस्थिति के विटामिन-डी काम नहीं कर पाता।
76. स्वस्थ व्यक्ति सिर्फ 5 मिनट शौच में लगाता है।
77. भोजन करते समय डकार आपके भोजन को पूर्ण और हाजमे को संतुष्टि का संकेत है।
78. सुबह के नाश्ते में फल, दोपहर को दही व रात्रि को दूध का सेवन करना चाहिए।
79. रात्रि को कभी भी अधिक प्रोटीन वाली वस्तुयें नहीं खानी चाहिए। जैसे- दाल, पनीर, राजमा, लोबिया आदि।
80. शौच व भोजन के समय मुंह बंद रखें। भोजन के समय टीवी ना देखें।
81. मासिक चक्र के दौरान स्त्री को ठंडे पानी से स्नान व आग से दूर रहना चाहिए।
82. जो बीमारी जितनी देर से आती है, वह उतनी देर से जाती भी है।
83. जो बीमारी अंदर से आती है, उसका समाधान अंदर से होना चाहिए।
84. एलोपैथी ने एक ही चीज दी है दर्द से राहत। एलोपैथी की दवाओं के कारण ही लोगों की किडनी, लीवर, आँतें, हृदय खराब हो रहे हैं। एलोपैथी एक बीमारी खत्म करती है तो दस बीमारी देकर भी जाती है।
85. खाने की वस्तु में कभी भी ऊपर से नमक नहीं डालना चाहिए, ब्लड-प्रेशर बढ़ता है।
86. रंगों द्वारा चिकित्सा करने के लिए इंद्रधनुष को समझ लें, पहले जामुनी, फिर नीला ... अंत में लाल रंग।
87. छोटे बच्चों को सबसे अधिक सोना चाहिए, क्योंकि उनमें वह कफ प्रवृत्ति होती है। स्त्री को भी पुरुष से अधिक विश्राम करना चाहिए।
88. जो सूर्य निकलने के बाद उठते हैं, उन्हें पेट की भयंकर बीमारियाँ होती हैं, क्योंकि बड़ी आँत मल को चूसने लगती है।
89. बिना शरीर की गंदगी निकाले स्वस्थ शरीर की कल्पना निरर्थक है। मल-मूत्र से 5%, कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ने से 22% तथा पसीना निकलने से लगभग 70% विजातीय तत्व शरीर से निकलते हैं।
90. चिंता, ऋोध, ईर्ष्या करने से गलत हार्मोन्स का निर्माण होता है जिससे कब्ज, बवासीर, अजीर्ण, अपच, रक्तचाप, थायरायड की समस्या उत्पन्न होती है।
91. गर्मियों में बेल, गुलकंद, तरबूजा, खरबूजा व सर्दियों में सफेद मूसली, सोंठ का प्रयोग करें।
92. प्रसव के बाद माँ का पीला दूध बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता को 10 गुना बढ़ा देता है। यदि यह मिलता है तो बच्चों को टीके लगाने की आवश्यकता नहीं होती है।
93. रात को सोते समय सर्दियों में देशी मधु लगाकर सोयें, त्वचा में निखार आएगा।
94. दुनिया में कोई चीज व्यर्थ नहीं, हमें उपयोग करना आना चाहिए।
95. जो अपने दुखों को दूर करके दूसरों के भी दुःखों को दूर करता है, वही मोक्ष का अधिकारी है।
96. सोने से आधे घंटे पूर्व जल का सेवन करने से वायु नियंत्रित होती है, लकवा, हार्ट-अटैक का खतरा कम होता है।
97. भोजन में छ: रसों (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय) के शामिल होने से शरीर में पोषक तत्वों का असंतुलन नहीं होता।
98. तेज धूप में चलने के बाद, शारीरिक श्रम करने के बाद, शौच से आने के तुरंत बाद जल का सेवन निषिद्ध है।
99. त्रिफला अमृत है जिससे वात, पित्त, कफ तीनों शांत होते हैं। इसके अतिरिक्त भोजन के बाद पान व चूना।
100. इस विश्व की सबसे महँगी दवा 'लार' है, जो प्रकृति ने तुम्हें अनमोल दी है। इसे तंबाकू, पान पराग के साथ व्यर्थ ना करें। ■

अपील

सम्माननीय समाजजन,
जय जिनेन्द्र !

दिग्म्बर जैन गोलापूर्व समाज के समस्त परिवारों के लिए एक मंच पर साथ लाने के लिए अखिल भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन गोलापूर्व महासभा ने जो महायज्ञ ऑनलाइन जनगणना के माध्यम से प्रारंभ किया है, उसमें अपनी समाज की समस्त सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारीण, सम्माननीय विद्वानों, वरिष्ठजनों, कार्यकर्ताओं, मातृशक्ति एवं युवाओं से विशेष आग्रह है कि अपनी ओर से इसमें छोटी सी आहुति का योगदान अवश्य करें। अर्थात् ऑनलाइन जनगणना के इस विश्व स्तरीय अभियान में हम सभी का सामाजिक दायित्व है कि यह सुनिश्चित करें कि अपने परिवार के साथ-साथ समाज का कोई भी परिवार जो कि देश अथवा विदेश में कहीं भी निवासरत है, उनका रजिस्ट्रेशन, ऑनलाइन जनगणना में किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति के कारण कहीं छूट तो नहीं रहा है, यह कार्य आप सभी के विशिष्ट सहयोग से ही सम्पन्न किया जा सकता है। हमारी जनगणना टीम के समस्त सक्रिय सदस्य निःस्वार्थ सेवा भाव से विभिन्न माध्यमों से आप तक जानकारी पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। अभी तक 4000 से अधिक सदस्यों का डेटाबेस वेबसाइट में समाविष्ट किया जा चुका है। वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करके आप निम्न जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। रजिस्ट्रेशन न होने पर निम्न जानकारी से वंचित रहेंगे :-

1. हमारी अपनी समाज का गौरवशाली इतिहास व अतिरुद्धर्भ जानकारियाँ।
2. समाज के होने वाले आगामी धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम के आयोजन की त्वरित जानकारी।
3. समाज में होने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी।
4. आपके, निजवंश के सुदूर परिवार से जुड़ाव हो सकेगा।
5. विदेश, देश, राज्य, जिला, तहसील, गाँव में निवासरत समाज जन की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।
6. मेट्रोमोनियल से संबंधित जानकारी ले सकेंगे।
7. स्मृति शेष के माध्यम से जो व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहे उनकी मेमोरी को आगे सहेजकर रखना।

तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों की जानकारियाँ आपको इस वेबसाइट के माध्यम से समय-समय पर मिलती रहेंगी। अतिशीघ्र अपनी प्रविष्टि वेबसाइट पर समाविष्ट करें।

ऑनलाइन जनगणना में रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार भी समझी जा सकती है :-

1. कम्प्यूटर, लेपटॉप या मोबाइल पर वेबसाइट ओपन करें www.golapurvajainsamaj.com अथवा मोबाइल पर एप्लीकेशन डाउनलोड करें <http://pixelwebinfotech.com/djgmps/DJGMPS.ask>
2. ओपन करने के पश्चात आपको दो ऑप्शन दिखेंगे LOGIN और REGISTER
3. REGISTER पर क्लिक करें एवं अपना नाम, मोबाइल नंबर तथा स्वयं के द्वारा पासवर्ड बनाकर डालें। इसके बाद Create Account पर क्लिक करें।
4. आपको एक OTP प्राप्त होगा। OTP अपने मोबाइल पर डालें। इसके बाद आपको एक फार्म प्राप्त होगा, उसमें परिवार के मुखिया की जानकारी भरना है। फार्म सफलतापूर्वक समिट होने के बाद घर के अन्य सदस्यों की जानकारी भरने के लिए साइट में ही Copy ऑप्शन पर चुनकर परिवार के प्रत्येक सदस्यों के अलग-अलग फार्म द्वारा जानकारी भरी जाएगी।
5. परिवार के मुखिया एवं सभी सदस्यों की अलग-अलग फोटो प्रत्येक फार्म के साथ जोड़ना आवश्यक है वरना आपको फार्म Approve नहीं किया जा सकेगा। यह कार्य आपके डाटा की सुरक्षा के लिए किया जा रहा है।
6. सभी संयुक्त परिवारों के लिए एक महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखना होगा कि एक संयुक्त परिवार में जितने भी विवाहित जोड़े होंगे, उनके परिवार की एंट्री अलग से डाली जाए एवं जितने भी अविवाहित बेटा-बेटियाँ हैं उनकी एंट्री अपने माता-पिता के साथ ही डलेगी। अर्थात् संयुक्त परिवार में जितने भी कपल हैं, उनकी अलग-अलग परिवार आईडी बनेगी।
7. किसी कारणवश आपके मोबाइल नंबर पर ओटीपी नहीं आता है तो अपने शहर की जनगणना टीम के सदस्य से सम्पर्क करें जिसकी जानकारी वेबसाइट पर जनगणना वाले ऑप्शन में संयोजक टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।

सहयोग के लिए हमेशा तत्पर हमारी टीम के स्थानीय सदस्य जो कि आपके लिए सहयोग प्रदान करेंगे। इन सभी की जानकारी वेबसाइट पर संयोजक टीम में, जनगणना टीम के द्वारा प्राप्त हो सकेगी।

अतः आप सभी से आशा है कि इस कार्य को पूर्ण करने में आप अपना रजिस्ट्रेशन कर दूसरों को भी प्रोत्साहित करेंगे एवं आपका यह सहयोग भविष्य में एक मंच पर सम्पूर्ण गोलापूर्व समाज की जानकारी एक मील का पथर साबित होगी।

**जनगणना एवं वेबसाइट की टेक्निकल से संबंधित किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए समर्पक करें :-
राजेश जैन : 9303270923, दीपेश जैन : 9993818201, विवेक जैन : 9754340315**



BT GROUP OF INSTITUTIONS

SAGAR (M.P.)



B T Mahavidhyala

Approved by Government of M.P.
& Affiliated to M.C.B.U. Chhattarpur



BTIRT
An ISO:9001-2008 Certified Institute

**Babulal Tarabai
Institute of Research
and Technology**



**BABULAL TARABAII
INSTITUTE OF
NURSING SCIENCES**

NH 26, Narsinghpur Road Sironja Sagar MP



**BABULAL TARABAII INSTITUTE
OF PHARMACEUTICAL SCIENCE**

Approved by AICTE and PCI, New Delhi



BTIE कॉलेज

ए. शी.टी.ई. नई दिल्ली से माध्यमिक प्राव. एवं डॉ. हरिंश्वर गौर विश्वविद्यालय से संबद्ध
Dr. Harisingh Gour Nagar, Opp. Hotel Paradise,
Makroniya, Sagar - 470 004 (M.P.)



**Little Star
SHAILESH
MEMORIAL
SCHOOL**



**LITTLE FLOWER
PLAY GROUP**



◀ **Santosh Jain "Ghari"**
Chairman

बेहतरीन परिणाम, बढ़ता आसमान बीटी ग्रुप के सफलतम उपक्रम

- B.E./B.Tech •M.Tech •B.Sc Nursing •B.Pharm
- B.Ed. •B.A. B.Ed. •B.Sc. •B.Com. •B.C.A •M.A. •M.Com.
- PGDCA •MBA •Polytechnic •Play Group to Class 12th

अधिक जानकारी के लिए संपर्क: 091790 73003, 97134 41188

www.btirt.ac.in